3. (ख) चोटी

पाठगत प्रश्न-5.1

1. (ख) माताओं को
2. (ग) कष्ट सहने की आदत नहीं थी

पाठगत प्रश्न-5.2

1. (ख) कृष्ण के हाथ की रोटी मिल गई
2. (ग) लोक

❀ ❀ ❀

6

मूर्ख कौन

किसी काम को ठीक ढंग से नहीं करने वाले व्यक्ति को देखकर, उसे हम अक्सर मूर्ख समझ लेते हैं। ऐसे व्यक्ति का लोग मज़ाक उड़ाते हैं और अपना मनोरंजन करते हैं; जबकि वही व्यक्ति किसी भिन्न अवसर पर अपने सहज ज्ञान से ऐसी बात कह देता है कि उसे सुनकर सब चकित रह जाते हैं। ऐसे व्यक्ति को हम मूर्ख नहीं कह सकते। एक लोककथा पर आधारित इस पाठ में हम ऐसे ही एक व्यक्ति के बारे में पढ़ेंगे।

उद्‌देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- इस लोककथा को अपने शब्दों में सुना सकेंगे;
- कहानी के प्रत्येक पात्र के गुणों को रेखांकित कर सकेंगे;
- लोककथा में निहित शिक्षा/संदेश का उल्लेख कर सकेंगे;
- विशेषण शब्दों को पहचानकर उनका उपयोग कर सकेंगे।

करके सीखिए

आपने कभी किसी व्यक्ति की मूर्खता की कहानी ज़रूर पढ़ी या सुनी होगी। उस कहानी का संदेश दो वाक्यों में लिखिए–

....

....

6.1 मूल पाठ

मगध नरेश बड़े धर्मात्मा, सत्यप्रिय एवं न्यायप्रिय थे। राजा के राज्य में सभी सुखी थे। राजा बहुत प्रतापी थे। उनकी सभा में बड़े-बड़े विद्वान थे, ज्योतिषी थे, तांत्रिक, उच्च कोटि के गायक और बड़े-बड़े योद्धा थे। आसपास के राजा उनसे डरते थे। राजा ने एक दिन सोचा- हमारी सभा में सभी तरह के लोग हैं, मगर कोई मूर्ख नहीं है। एक मूर्ख भी अपनी सभा में होना चाहिए।

राजा ने अपने मंत्रियों को आदेश दिया कि एक मूर्ख खोजकर ले आइए, उसे भी हम अपनी सभा में स्थान देंगे। राजा के अनुचर मूर्ख की तलाश में निकल पड़े। सभी जगह ढूँढा, मगर कोई मूर्ख व्यक्ति नहीं मिला। एक दिन सैनिक जंगल से गुजर रहे थे। वहाँ एक आदमी कुएँ से पानी खींच रहा था। वह रस्सी में बाल्टी बाँधकर कुएँ में डुबोता, फिर ऊपर खींचता। पर, बाल्टी ऊपर खाली ही आती। यह प्रयत्न वह बार-बार किए जा रहा था। सैनिक नज़दीक गए तो देखा कि बाल्टी की पेंदी टूटी है। जब तक वह बाल्टी ऊपर खींचता, पानी टूटी पेंदी से नीचे निकल जाता। सैनिकों ने सोचा इससे बड़ा मूर्ख और कौन होगा? वे उस मूर्ख को राजा के पास ले गए।

सैनिकों ने राजा को बताया कि यह आदमी कुएँ से पानी खींचता था, मगर पानी बाहर नहीं आता था। पेंदी टूटी होने के कारण पानी नीचे निकल जाता था। राजा तुरंत समझ गया कि यह एक मूर्ख है। राजा ने उस मूर्ख से कहा- "आज से आप हमारे दरबार में रहेंगे। आपको राजमूर्ख के पद पर नियुक्त किया जाता है।"

मूर्ख को राजकीय पोशाक दी गई। राजमूर्ख के नाम का एक पट्टा गले में डाला गया। सभा में या सभा के बाद, जब भी राजा थक जाते या परेशान होते तो अपना मनोरंजन राजमूर्ख से तरह-तरह के प्रश्न करके किया करते थे।

एक बार राजा बीमार पड़ गए। उनका सभा में आना भी बंद हो गया। काफ़ी दिन बीत गए। मूर्ख का सभा में मन नहीं लगता था। एक दिन वह राजा की दी हुई पोशाक पहनकर और गले में अपना पट्टा डालकर राजा के पास जा पहुँचा। राजा को प्रणाम किया और बोला– "महाराज आप कई दिनों से सभा में क्यों नहीं आ रहे हैं?"

राजा ने कहा– "अरे मूर्ख, मैं तो काफ़ी दिन से बीमार हूँ। अब तो लंबी यात्रा करनी है।"

मूर्ख ने उत्सुक होकर पूछा– "महाराज, यह यात्रा कितने दिन की होगी? कितने दिनों के बाद लौटना है?"

राजा ने कहा– "यह यात्रा तो लंबी होती है। वहाँ से कोई लौटता नहीं है। यह तो अंतिम यात्रा कहलाती है।"

मूर्ख नहीं समझा।

मूर्ख ने कहा– "महाराज, जब इतनी लंबी यात्रा है, तो रानियों को भी साथ ले जाइए। सभी योग्य सभासदों व योद्धाओं को भी साथ ले जाइए। और हाँ, साथ में इतना धन अवश्य ले जाइए, जो आपकी यात्रा के लिए पर्याप्त हो।"

राजा ने कहा– "अरे मूर्ख! यह सभी की अंतिम यात्रा होती है। इससे कोई लौट के नहीं आ सकता। इसमें कोई कुछ भी साथ नहीं ले जा सकता। इसमें मरने के बाद अंतिम संस्कार कर दिया जाता है।"

मूर्ख ने कहा– "लेकिन महाराज, आपने अपना पूरा जीवन राजाओं से लड़ने में निकाल दिया। इतने युद्ध जीते, वहाँ से इतना धन लूटा। जनता से सभी तरह के कर वसूले। राजकोष के लिए धन इकट्ठा किया। इतने लोग युद्ध में मारे गए। जनता की बददुआएँ लीं। यह सब तो व्यर्थ गया, यदि यह आपके साथ ही नहीं जा सकता। महाराज, सही मायने में मूर्ख मैं नहीं, आप हैं। आपने अपना सारा जीवन यों ही बरबाद कर दिया। और, अब कुछ भी साथ लेकर नहीं जा सकते।"

मूर्ख ने अपना पट्टा राजा के गले में डाल दिया तथा राजकीय पोशाक राजा के पास रखकर चल दिया।

राजा मूर्ख की बात सुनकर आश्चर्य में पड़ गया। राजा ने सोचा– इन्सान यहाँ इतने पाप-पुण्य करता है। इतने लोगों को सताता है। परिवार, धन, दौलत – सब यहीं रह जाते हैं। साथ में कुछ भी नहीं जाता।

शब्दार्थ

नरेश	=	राजा
धर्मात्मा	=	धर्म के मार्ग पर चलने वाला
सत्यप्रिय	=	सत्य के मार्ग पर चलने वाला
न्यायप्रिय	=	न्याय के मार्ग पर चलने वाला
प्रतापी	=	जिसका यश दूर-दूर तक फैला हो
तांत्रिक	=	तंत्र विद्या का ज्ञान रखने वाला

अनुचर	=	सेवक
राजकीय पोशाक	=	राज-दरबार में पहना जाने वाला वस्त्र
उत्सुक	=	जानने की तीव्र इच्छा वाला
बद्दुआएँ	=	बुरी दुआएँ, अहित की कामनाएँ

6.2 बोध-प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. मगध नरेश के दरबार में इनमें से कौन नहीं था–

   (क) ज्योतिषी ☐ (ख) गायक ☐

   (ग) मूर्ख ☐ (घ) तांत्रिक ☐

2. राजा राजमूर्ख से प्रश्न पूछ कर–

   (क) मनोरंजन करते थे ☐ (ख) दु:खी होते थे ☐

   (ग) खुश होते थे ☐ (घ) बेचैन होते थे ☐

3. 'अंतिम यात्रा' का अर्थ है–

   (क) लंबी यात्रा ☐ (ख) अंतिम बीमारी ☐

   (ग) मृत्यु ☐ (घ) दूर की यात्रा ☐

6.3 आइए समझें

6.3.1 अंश–1

मगध नरेश .... तरह-तरह के प्रश्न करके किया करते थे।

इस लोककथा में मगध नरेश के दरबार का वर्णन है। उनके दरबार में मूर्ख को छोड़ सभी प्रकार के लोग थे। राजा अपने दरबार में ज्योतिषी, तांत्रिक, गायक, योद्धाओं के साथ एक मूर्ख को भी रखना चाहते थे। उन्होंने मंत्रियों को आदेश दिया कि कहीं से एक मूर्ख ले आओ। बहुत ढूँढने के बाद सैनिकों को एक ऐसा आदमी मिला, जो बाल्टी और रस्सी के सहारे कुएँ से पानी निकालने की कोशिश कर रहा था, लेकिन बाल्टी की पेंदी फूटी होने के कारण पानी बाल्टी में रुक नहीं रहा था। इस निरर्थक प्रयास को करते देख सैनिकों को विश्वास हो गया कि यह आदमी मूर्ख है। राजा के सामने इस आदमी को ले जाकर सैनिकों ने उसकी

मूर्खता की कहानी राजा को सुना दी। कहानी सुनकर राजा को भी विश्वास हो गया कि यह आदमी मूर्ख है। राजा ने उसे राजमूर्ख का पद दे दिया और राजकीय पोशाक के साथ उसके गले में राजमूर्ख का पट्टा डाल दिया। राजा जब थक जाते या परेशान होते तो राजमूर्ख से तरह-तरह के प्रश्न करके अपना मनोरंजन किया करते थे।

पाठगत प्रश्न-6.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. सैनिकों ने मूर्ख व्यक्ति की पहचान की–

(क)	श्रम करते रहने से	☐	(ख)	उसके रस्सी खींचने के ढंग से	☐
(ग)	निरर्थक प्रयास में रत रहने से	☐	(घ)	जंगल में पानी निकालने से	☐

2. राजा राजमूर्ख से प्रश्न करता था–

(क)	अपनी विद्वत्ता जताने के लिए	☐	(ख)	उसे व्यस्त रखने के लिए	☐
(ग)	अपने मनोरंजन के लिए	☐	(घ)	मूर्खता की थाह लेने के लिए	☐

3. राजा के समक्ष मूर्ख को किसने उपस्थित किया?

(क)	सैनिकों ने	☐	(ख)	मंत्री ने	☐
(ग)	ज्योतिषी ने	☐	(घ)	तांत्रिक ने	☐

6.3.2 अंश-2

एक बार .... कुछ भी वहीं जाता है।

एक बार राजा बीमार पड़ गया। वह कई दिनों तक दरबार में नहीं आया। राजमूर्ख चिंतित होकर राजा से मिलने गया। उसने राजा से सभा में नहीं आने का कारण पूछा। राजा ने मूर्ख को बताया कि वह बीमार है और अब लंबी यात्रा पर चला जाएगा। मूर्ख के उत्सुक होकर यह पूछने पर कि यात्रा से कितने दिनों बाद लौटना है; राजा ने कहा कि इस यात्रा से लौटकर कोई नहीं आता। यह तो सबकी अंतिम यात्रा होती है। मूर्ख बोला- "जब आप इस यात्रा में अपने साथ न किसी व्यक्ति को ले जा सकते हैं और न धन-दौलत, तो इतने सारे युद्धों में लोगों को मारने और धन इकट्ठा करने से क्या लाभ हुआ! महाराज, आपने अपना सारा जीवन बरबाद कर दिया। सही अर्थों में मूर्ख मैं नहीं, आप हैं।" मूर्ख ने अपना पट्टा राजा के गले में डालकर राज पोशाक वहीं रख दी और वहाँ से चला गया।

राजा मूर्ख की बात से चकित होकर सोचने लगा- इन्सान यहाँ कितने पाप-पुण्य करता है; लोगों को सताता

है; धन, दौलत, परिवार जोड़ता है, लेकिन जब मृत्यु होती है, तो साथ कुछ नहीं ले जा पाता। मूर्ख का फूटी पेंदीवाली बाल्टी से पानी निकालना यह स्पष्ट संकेत करता है कि जैसे पेंदी फूटी बाल्टी से कुएँ का पानी निकालना निरर्थक प्रयास है, वैसे ही इस दुनिया में धन-संपत्ति आदि के लिए जीवन को गँवा देना भी निरर्थक प्रयास है।

पाठगत प्रश्न-6.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. राजा कई दिनों तक दरबार में इसलिए नहीं आया कि–

   (क) वह बीमार था ☐ (ख) वह अंतिम यात्रा पर था ☐

   (ग) वह लंबी यात्रा पर था ☐ (घ) उसकी मृत्यु हो गई थी ☐

2. मूर्ख ने राजा से लंबी यात्रा पर किसे साथ ले जाने के लिए नहीं कहा–

   (क) रानियों को ☐ (ख) सभासदों को ☐

   (ग) मूर्ख को ☐ (घ) योद्धाओं को ☐

3. मूर्ख का मन सभा में इसलिए नहीं लग रहा था, क्योंकि–

   (क) राजा सभा में नहीं आता था ☐ (ख) राजा ने उसे डाँट दिया था ☐

   (ग) राजा लंबी यात्रा पर था ☐ (घ) वास्तव में राजा मूर्ख था ☐

6.4 भाषा-प्रयोग

मूल पाठ की भाषा खड़ी बोली हिंदी है। लोककथा पर आधारित होने के कारण भाषा में तत्सम, तद्भव, देशज, आगत आदि विविध प्रकार के शब्दों का प्रयोग हुआ है; जैसे-

तत्सम - सत्यप्रिय, न्यायप्रिय, प्रतापी, नरेश, विद्वान, अनुचर

तद्भव - गला, कुआँ, दिन

देशज - पेंदी, लोटा, बाट

आगत - इन्सान, दौलत, आदमी, वसूल

भाषा में संवाद-शैली का प्रयोग है। नाटकीयता का पुट है। विशेषण एवं सर्वनाम शब्दों का प्रयोग है। आइए, विशेषण के बारे में विस्तार से जानें:

विशेषण

इस पाठ में सत्यप्रिय, न्यायप्रिय, प्रतापी, सुखी, बड़े-बड़े, टूटी आदि शब्द आए हैं, इनमें से 'सत्यप्रिय', 'न्यायप्रिय' और 'प्रतापी' शब्द राजा की; 'सुखी' शब्द लोगों की; 'बड़े-बड़े' शब्द योद्धाओं की और 'टूटी' शब्द बाल्टी की विशेषता बता रहे हैं। 'राजा', 'लोग', 'योद्धा' तथा 'बाल्टी' संज्ञा शब्द हैं।

संज्ञा की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

सर्वनाम शब्द संज्ञा के स्थान पर आते हैं, इसलिए विशेषण शब्द सर्वनाम की विशेषता भी बताते हैं; जैसे- 'अकेला वह इस काम को नहीं कर सकता।' इस वाक्य में शब्द 'अकेला' 'वह' सर्वनाम की विशेषता बता रहा है।

इस तरह, **संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।**

जैसे- <u>गरम</u> पानी, <u>कुछ</u> कपड़ा, <u>थोड़ा</u> आटा, <u>लाल</u> साड़ी, <u>यह</u> पुस्तक, <u>एक</u> लड़का, <u>मेरा</u> भाई - इनमें रेखांकित शब्द विशेषण हैं।

विशेषण के भेद

विशेषण चार प्रकार के होते हैं– (1) गुणवाचक विशेषण, (2) संख्यावाचक विशेषण, (3) परिमाणवाचक विशेषण, (4) सार्वनामिक विशेषण।

1. **गुणवाचक विशेषण –** ऐसे विशेषण शब्द जो संज्ञा और सर्वनाम शब्दों के गुण, दोष, रंग, रूप, आकार और दशा आदि की विशेषता प्रकट करते हैं, गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

- सुमन ने <u>पीली</u> कमीज़ पहनी है।
- <u>कमज़ोर</u> आदमी गिर गया।
- <u>मीठा</u> आम ही दो।
- <u>काले</u> बादल घिर आए।

उपर्युक्त वाक्यों में 'पीली', 'कमज़ोर', 'मीठा' और 'काले' गुणवाचक विशेषण हैं।

आइए, कुछ गुणवाचक विशेषण और जानें-

रंग – हरा, लाल, पीला, नीला, भूरा आदि।

आकार – छोटा, बड़ा, ऊँची, नीची, पतली, लंबी, चौड़ी आदि।

गुण – बुरा, ईमानदार, कायर, महान, कंजूस, मेहनती आदि।

दशा – अमीर, गरीब, रोगी, स्वस्थ, सूखा, गीला आदि।

रूप – सुडौल, सुंदर, खूबसूरत, भद्दा, मोहक आदि।

2. **संख्यावाचक विशेषण –** ऐसे विशेषण शब्द, जो संज्ञा और सर्वनाम शब्दों की संख्या-संबंधी विशेषता को प्रकट करते हैं, संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

- तीसरा मकान कंचन का है।
- प्रणय ने दो टॉफियाँ लीं।

उपर्युक्त वाक्यों में 'तीसरा' और 'दो' संख्यावाचक विशेषण हैं।

संख्यावाचक विशेषण के भेद – संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं–

(क) **निश्चित संख्यावाचक विशेषण –** ऐसे विशेषण शब्द, जिनसे संज्ञा और सर्वनाम शब्दों की निश्चित संख्या का पता चलता है, निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

- पाँचों सहेलियाँ नाटक देखने गयीं।
- मैं दो रसगुल्ले खाऊँगी।
- तीनों दरवाज़े बंद करो।
- चार लड़कियाँ नृत्य करेंगी।

उपर्युक्त वाक्यों में 'पाँचों', 'दो', 'तीनों' और 'चार' से निश्चित संख्या का पता चलता है। इसलिए ये निश्चित संख्यावाचक विशेषण हैं।

(ख) **अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण –** ऐसे विशेषण शब्द, जिनसे संज्ञा और सर्वनाम शब्दों की निश्चित संख्या प्रकट नहीं होती, अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

- कुछ मज़दूर काम कर रहे हैं।
- आज कम छात्र आए हैं।
- कई छात्राएँ मिलकर गाएँगी।
- अधिक लड़के उस ओर चले गए।

उपर्युक्त वाक्यों में 'कुछ', 'कम', 'कई' और 'अधिक' अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण हैं, क्योंकि इनसे निश्चित संख्या का पता नहीं चलता।

3. **परिमाणवाचक विशेषण –** ऐसे विशेषण शब्द, जिनसे संज्ञा और सर्वनाम की परिमाण यानी माप-तौल संबंधी विशेषता का पता चलता है, परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

- पल्लवी दो किलो आलू लाई।
- चाय में थोड़ी चीनी और डालो।

उपर्युक्त वाक्यों में 'दो किलो' और 'थोड़ी' परिमाणवाचक विशेषण हैं। जिन चीज़ों को गिना नहीं जा सकता, उन्हें मापा या तोला जाता है। परिमाणवाचक विशेषण से माप-तौल का पता चलता है।

4. **सार्वनामिक विशेषण –** ऐसे सर्वनाम शब्द, जिनका उपयोग संज्ञा की विशेषता प्रकट करने के लिए किया जाता है, सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

- इस छात्र को भगाओ।
- वह पुस्तक चाहिए।

- <u>उस</u> छात्र ने गीत गाया।
- <u>यह</u> गमला सुंदर है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'इस', 'वह', 'उस' और 'यह' सार्वनामिक विशेषण हैं। इनका उपयोग क्रमशः छात्र, पुस्तक, छात्रा और गमला की विशेषता प्रकट करने के लिए हुआ है। सर्वनाम होने पर भी यह विशेषता प्रकट करते हैं, इसलिए ये सार्वनामिक विशेषण हैं।

सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में अंतर – सर्वनाम शब्दों का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है; जैसे– डॉ. अशोक कुमार प्रसिद्ध डॉक्टर हैं। वे आ रहे हैं।

दूसरे वाक्य में 'वे' शब्द सर्वनाम है। यह डॉ. अशोक कुमार के स्थान पर आया है।

सार्वनामिक विशेषण ऐसे सर्वनाम होते हैं, जो संज्ञा शब्दों से पहले लगकर उनकी विशेषता प्रकट करते हैं; जैसे- वह आदमी चला गया। इस वाक्य में 'वह' सार्वनामिक विशेषण है। इससे 'आदमी' की विशेषता प्रकट हो रही है।

6.5 आपने क्या सीखा

- बहुत से कार्य ऐसे होते हैं, जो साधारणतः मूर्खतापूर्ण नहीं लगते पर होते मूर्खतापूर्ण हैं।
- मृत्यु जीवन का अंतिम सत्य है, पर जीवन में किए गए कार्यों का महत्त्व अधिक है।
- जीवन को केवल धन-संपत्ति के संग्रह में गँवा देना जीवन की निरर्थकता है।
- संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।
- विशेषण चार प्रकार के होते हैं - गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक और सार्वनामिक।

6.6 योग्यता-विस्तार

- यह पाठ एक लोककथा पर आधारित है। लोककथाओं के लेखक का नाम बता पाना संभव नहीं होता। लोककथाएँ एक समाज और समुदाय से दूसरे समाजों और समुदायों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी वाचिक परंपरा में आगे बढ़ती रहती हैं। लोककथाओं में हमेशा कोई-न-कोई जीवन-मूल्य, नैतिक आदर्श, गहरी मानवीय संवेदना, सामाजिक शिक्षा, प्रेरणा आदि छिपे होते हैं; जिन्हें जानना हमारे लिए उपयोगी और सार्थक हो सकता है।
- आपने अपने घर के बड़े-बुजुर्गों से बचपन में ऐसी कई लोककथाएँ सुनी होंगी। उन कथाओं को याद करके लिखिए और एक संग्रह तैयार कीजिए।

6.7 पाठांत प्रश्न

1. **सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

   (i) 'मूर्ख कौन' पाठ में सही मायने में मूर्ख किसे बताया गया है–

   (क) राजमूर्ख को ☐

   (ख) राजा को ☐

   (ग) सैनिकों को ☐

   (घ) मंत्रियों को ☐

   (ii) राजा मूर्ख की बात सुनकर आश्चर्य में पड़ गया, क्योंकि उसकी बात–

   (क) मनोरंजक थी ☐

   (ख) मूर्खतापूर्ण थी ☐

   (ग) तर्कपूर्ण थी ☐

   (घ) कपटपूर्ण थी ☐

2. **'अंतिम यात्रा' से क्या आशय है- लिखिए :**

   ....

   ....

3. **राजमूर्ख को मूर्ख न मानने के दो तर्क लिखिए :**

   ....

   ....

4. **'मूर्ख कौन' लोककथा को पढ़कर आपको क्या शिक्षा मिलती है? उल्लेख कीजिए :**

   ....

   ....

5. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

हम सब समाज में सभ्य बनना और दिखना चाहते हैं। सभ्य दिखने के लिए शिक्षा ग्रहण करते हैं। आधुनिक फ़ैशन अपनाते हैं। गाँव से, शहर से, महानगरों से देश-विदेश घूमने जाते हैं। नए-नए रीति-रिवाज़ सीखने की कोशिश करते हैं। अपने हाव-भाव और कपड़ों से सभ्य व शिक्षित दिखने की कोशिश करते हैं। मोबाइल फ़ोन और आईपैड का इस्तेमाल करते हैं। आँखों पर चश्मा लगा लेते हैं। मगर, सभ्य बनने की इस कोशिश के दौरान टिशू पेपर से चेहरा पोंछकर उसे सड़क पर फेंक देते हैं। पूजा-जागरण करते हैं, तो रास्ता घेर लेते हैं। मोहल्ले वालों की नींद उड़ा देते हैं। कूड़ा-करकट सड़क पर फेंक देते हैं। सभ्यता के सारे लबादे ओढ़ने के बावजूद हमारी आत्मा सभ्य नहीं हो पाई है।

(i) हम समाज में सभ्य बनने व दिखने के लिए क्या-क्या करते हैं?

....

(ii) हम शिक्षित दिखें, इसके लिए क्या-क्या करते हैं?

....

(iii) हमारी आत्मा सभ्य क्यों नहीं हैं? कोई दो कारण लिखिए।

....

6.8 उत्तरमाला

बोध-प्रश्न

1. (ग) मूर्ख
2. (क) मनोरंजन करते थे
3. (ग) मृत्यु

पाठगत प्रश्न-6.1

1. (ग) निरर्थक प्रयास में रत रहने से
2. (ग) अपने मनोरंजन के लिए
3. (क) सैनिकों ने

पाठगत प्रश्न-6.2

1. (क) वह बीमार था
2. (ग) मूर्ख को
3. (क) राजा सभा में नहीं आता था

❀ ❀ ❀

7

लेखन-कौशल

अपने चारों ओर दृष्टि डालिए। आप हैरान होंगे कि कितनी सारी वस्तुएँ आपके चारों ओर हैं। घर में, दफ़्तर में, खेत में, खलिहान में, रास्ते में, बस या रेल में आप एकदम अकेले कभी नहीं होते। कितनी सारी चीज़ें आपके आसपास होती हैं। आप उनके बारे में बता सकते हैं, पूछ सकते हैं, बातचीत कर सकते हैं; और तो और, उनके बारे में कुछ लिख भी सकते हैं। बोली-बताई बात तो कहने-सुनने तक ही समाप्त हो जाती है; किंतु आप जो लिखकर बताते हैं, वह स्थायी रहती है। उसे अनेक लोग पढ़ सकते हैं। दूसरे को पढ़वा सकते हैं। उसे छापा जा सकता है। तब वह और अधिक लोगों तक पहुँच जाती है और अधिक समय तक बनी रहती है। इस पाठ को आप पढ़ रहे हैं। यह प्रमाण है कि पहले इसे लिखा गया, फिर छपकर आपके हाथों तक पहुँचाया गया। अब हज़ारों पाठक इसे पढ़ सकते हैं।

क्या आपके मन में यह इच्छा नहीं होती कि आप भी कुछ लिखें! अवश्य होती होगी। तो उठाइए कलम, आज हम कुछ लिखना सीखेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- सरल शब्दों में वर्णन करना सीख सकेंगे;
- अपने विचारों को उपयुक्त भाषा में प्रभावी ढंग से लिख सकेंगे;
- काव्य-पंक्ति या सूक्ति में निहित विचार को समझकर उसका विस्तार कर सकेंगे;
- दिए गए विषय पर एक अनुच्छेद लिख सकेंगे।

करके सीखिए

नीचे दिए चित्रों को देखिए। इनके बारे में एक वाक्य हम लिख रहे हैं। दो वाक्य आप लिखिए।

1. कप में चाय है। ....
2. चाय ....
3. ....

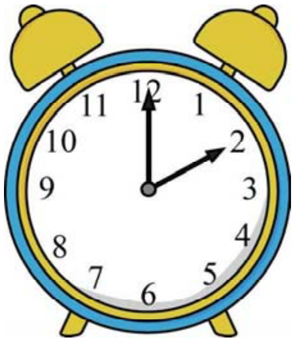

1. यह अलार्म घड़ी है। ....
2. मैं ....
3. ....

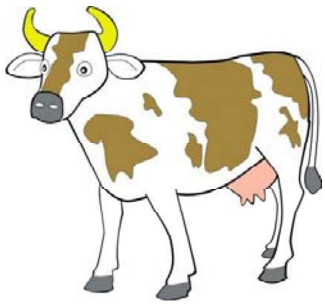

1. मेरी ....
2. ....
3. गाय का दूध गुणकारी होता है। ....

7.1 आइए समझें

7.1.1 अंश-1

किसी के बारे में कुछ बताना हो, तो हम वाक्य बनाते हैं। इसे परिचय देना कह सकते हैं। नीचे दिए वाक्य पढ़िए–

- कप में चाय है।
  कप में **गरम** चाय है।
  कप में **बहुत गरम** चाय है।
  मेरे कप में **बहुत गरम** चाय है।

परिचय देने वाली वाक्य-रचना में किसी एक वस्तु का परिचय देते हुए उसका वर्णन करते हैं। वर्णन करने में कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग अच्छा लगता है, जो उस वस्तु के बारे में विशेष बातें बता रहे हों। इन्हें 'विशेषण' कहते हैं, विशेषणों के प्रयोग से परिचय आकर्षक और रोचक बनता है; जैसे–

- मेरी माँ **बहुत अच्छी** है।
- वह **स्वादिष्ट** खाना बनाती है।
- **मेरी** बहन रमा आ रही है।
- रमा का चेहरा **गोल** है।
- उसका माथा **चौड़ा** है।
- **चौड़े** माथे पर **लाल** बिंदी **अच्छी** लगती है।

आप भी कुछ लिखिए

आइए, वर्णन करना सीखने के लिए कुछ और अभ्यास करें। आप अपने जूतों पर पॉलिश तो करते हैं! लिखकर बताइए कि पॉलिश कैसे की जाती है? आप इसे लिखते समय दिए गए शब्दों का प्रयोग कर सकते हैं :

पुराना कपड़ा, पोंछना, मैले, ब्रुश, डिबिया, थोड़ी-सी पॉलिश, एक परत, धूप में रखना, रगड़ना, चमकाना, जगमग, चमचमाते

....

....

....

....

....

....

....

....

अब आप नीचे दिए चित्र को ध्यान से देखिए और उसका वर्णन लिखिए–

....

....

....

....

....

....

....

....

परिचय देते हुए जब हम किसी वस्तु अथवा दृश्य का वर्णन आठ–दस वाक्यों में करते हैं, तो उसे 'अनुच्छेद' कह सकते हैं। याद रखिए कि अनुच्छेद में उस वस्तु / घटना का वर्णन–

- छोटे–छोटे वाक्यों में हो;
- वाक्यों में परस्पर क्रम हो;
- वर्णन में रोचकता हो।

उदाहरण के लिए नीचे दिया गया अनुच्छेद पढ़िए–

मैं घर से बाज़ार जा रहा था। मैंने अपनी पुरानी साइकिल निकाली। उसे झाड़-पोंछकर साफ़ किया और भगवान का नाम लेकर चल पड़ा। काले बादल घिर आए थे। हल्की–सी बूँदें पड़ने लगीं। साइकिल पर मुझे बड़ा मज़ा आ रहा था। तभी साइकिल एक पत्थर से टकराई। संतुलन बिगड़ गया। एक ओर मैं गिरा, दूसरी ओर साइकिल। मैं उठा। साइकिल उठाने लगा, तो देखा उसकी चेन के दो टुकड़े हो गए थे। आसपास कोई मिस्त्री भी नहीं था। क्या करता! मैं चुपचाप साइकिल को लेकर पैदल ही लौट आया।

आप भी लिखिए

मान लीजिए कि जब आप सैर कर रहे थे, तो आपके एक पैर के जूते की एड़ी उखड़ गई। फिर क्या हुआ? कल्पना करके एक अनुच्छेद में लिखिए–

....

....

....

....

....

....

....

....

....

7.1.2 अंश-2

मनुष्य के पास कल्पना करने की अद्‌भुत शक्ति है। हम अनेक स्थितियों में तो वास्तविक वर्णन करते हैं, पर कभी-कभी हम कल्पना का सहारा भी लेते हैं। कल्पना के सहारे हम वस्तु या घटना के बारे में पहले मन में चित्र बना लेते हैं और उसके बाद रोचक शैली में लिखते हैं। यह वस्तु-वर्णन से थोड़ा भिन्न होता है। कल्पना और रोचकता के पुट से बनी रचना हमारे हृदय पर अमिट छाप छोड़ती है। आइए, कल्पना के सहारे एक स्वप्न का वर्णन करें।

कल्पना पर आधारित अनुच्छेद-लेखन

मैंने देखा कि मैं एक बड़े पत्थर के ऊपर खड़ा हूँ। पत्थर पर हरी-हरी काई जमी है। चारों ओर फिसलन है। मैं नीचे उतरना चाहता हूँ, पर फिसलने का डर है। पत्थर के नीचे गहरा गड्ढा है। वहाँ बड़े-बड़े साँप हैं। मैं फिसला तो सीधा विषैले साँपों की गोद में जा पड़ूँगा। समझ नहीं आ रहा कि क्या करूँ! तभी एक साँप ऊपर चढ़ने लगा। डर के मारे मेरे रोंगटे खड़े हो गए। गला सूख गया। पसीने से कपड़े भीग गए। मैं ज़ोर से चीखा। तभी मुझे माँ का मीठा स्वर सुनाई पड़ा। वे कह रही थीं- लगता है आज तुमने फिर कोई डरावना सपना देखा।

आप भी लिखिए

कल्पना के आधार पर गाँधी जी से हुई भेंट का वर्णन कीजिए–

....

....

....

....

....

....

....

7.1.3 अंश-3

अब हम दिए हुए विचार या सूक्ति को बढ़ाकर लिखना सीखेंगे। बढ़ाकर लिखने को पल्लवन कहते हैं। इसके लिए –

- पहले सूक्ति का आशय ठीक से समझ लीजिए;
- सूक्ति पर ध्यान केंद्रित कर उसके बारे में सोचिए;
- सूक्ति के विषय से संबंधित उदाहरण सोचिए;
- सूक्ति के विचार को आगे बढ़ाइए।

सूक्ति-पल्लवन : आप भला तो जग भला

हम संसार को कोसते हैं। हमें लगता है कि चारों ओर बुरे लोग हैं। कोई बुरा दिखाई पड़ता है, तो कोई झूठा; कोई धोखेबाज़, तो कोई स्वार्थी। हमें लगता है कि कोई भला है ही नहीं। पर, हम अपने बारे में कभी नहीं सोचते। क्या हमने किसी की मदद की? किसी को प्यार से समझाया? यदि हम दूसरों से भला व्यवहार करेंगे, तो दूसरे भी हमसे भला व्यवहार करेंगे। भलाई से भलाई पैदा होती है और बुराई से बुराई। इसलिए कहा भी गया है- "आप भला तो जग भला।"

आप भी कीजिए

नीचे दी हुई सूक्ति के विचार को बढ़ाकर लिखिए।

'जहाँ चाह, वहाँ राह'

....

....

....

....

7.2 आपने क्या सीखा

- विशेषणों के प्रयोग से वर्णन आकर्षक बनता है।
- लिखते समय वाक्य छोटे-छोटे हों।
- विचारों को क्रमवार प्रस्तुत करना चाहिए।
- वर्णन में रोचकता होनी चाहिए।
- चित्रों के आधार पर भी किसी वस्तु अथवा घटना का वर्णन किया जा सकता है।
- पल्लवन में सूक्ति का आशय ठीक से समझकर उसी विचार को आगे बढ़ाना चाहिए।

7.3 योग्यता-विस्तार

लिखना एक प्रकार का कौशल है। जैसे अन्य कामों में कुशलता प्राप्त करने के लिए उन्हें होते देखना, समझना और अभ्यास करना आवश्यक होता है, वैसे ही लेखन-कौशल के विकास के लिए भी ये चरण अनिवार्य हैं। आप जितना ही अधिक श्रेष्ठ लेखकों को पढ़ेंगे, आपको अच्छी तरह से अपनी बात कहने का ढंग आता जाएगा। आप व्याकरण को पढ़ने-समझने का प्रयास करेंगे, तो आप शब्दों का सही प्रयोग और प्रभावी वाक्य लिखने का ढंग सीखेंगे। लिखते रहेंगे, तो लिखना सीख जाएँगे। टैगोर, प्रेमचंद, निराला, यशपाल आदि लेखकों की रचनाएँ ढूँढ़कर पढ़िए। कामता प्रसाद गुरु की पुस्तक 'हिंदी व्याकरण' पढ़कर आप भाषा की बारीकियों को जान सकते हैं।

7.4 पाठांत प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों का उपयोग करते हुए अनुच्छेद लिखिए :
   स्नान, सुबह, पेड़-पौधों की सिंचाई, छुट्टी, गुनगुनाती धूप।
2. निम्नलिखित का परिचय पाँच-पाँच वाक्यों में दीजिए :
   अलार्म घड़ी, कंप्यूटर, ट्रैक्टर
3. 'जब मैंने पहली बार चाय बनाई' - विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।
4. प्रधानमंत्री से हुई भेंट का काल्पनिक वर्णन करते हुए एक अनुच्छेद लिखिए।
5. निम्नलिखित सूक्तियों के विचारों को बढ़ाकर एक-एक अनुच्छेद लिखिए :
   (i) अपना हाथ जगन्नाथ, (ii) रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय, (iii) साँच को आँच नहीं।

मूल्यांकन पत्र-1
(पाठ 1 से 7 तक)

1. पढ़े गए पाठों के आधार पर प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(i) प्रताप गाँव में रहकर क्या करता था?

....

(ii) दीवान ने गुरु नानक जी को खाने के लिए क्या दिया?

....

(iii) डॉ. विश्वेश्वरैया ने रेल की जंज़ीर क्यों खींची?

....

(iv) युवक ने स्वामी रामतीर्थ को फल देकर किसका मान बढ़ाया?

....

(v) मगध नरेश कैसे थे?

....

2. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए :

व्यर्थ = ...

व्यवस्था = ...

वाणी = ...

अतिथि = ...

आघात = ...

काग = ...

तड़ाग = ...

3. सही शब्द चुनकर खाली जगह भरिए :

(i) मोहन और प्रताप .... मित्र थे। (तेज़/गहरे)

(ii) एक जापानी युवक प्लेटफ़ॉर्म पर .... था। (पड़ा/खड़ा)

(iii) राजा के अनुचर मूर्ख की .... में निकल पड़े। (तलाश/याद)

(iv) मूर्ख ने अपना .... राजा के गले में डाल दिया। (कट्टा/पट्टा)

4. निम्नलिखित के दो-दो उदाहरण लिखिए :

संज्ञा ....

सर्वनाम ....

विशेषण ....

एकवचन ....

बहुवचन ....

5. 'धरती' और 'आकाश' के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

धरती ....

आकाश ....

6. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलकर लिखिए :

पुरुष ....

बकरा ....

लड़की ....

छोटा ....

बड़ी ....

7. एकवचन से बहुवचन बनाकर लिखिए :

लाठी ....

गधा ....

दवाई ....

साड़ी ....

रोटी ....

8. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

अच्छा इंसान बनने के लिए पहला गुण है- सेवा-भाव। सेवा-भाव का मतलब है- दूसरों की मदद करने की आदत। दूसरा गुण है- सहिष्णुता। सहिष्णुता का मतलब है- हर परिस्थिति में धीरज बनाए रखना। तीसरा गुण– 'मैत्री-भाव' का है। अर्थात् सबके साथ मिलकर रहना। चौथा गुण है- ईमानदारी।

पाँचवाँ गुण है- कार्य-कुशलता। मतलब, अपने काम की पूर्ण जानकारी रखना। हर काम को अच्छे ढंग से करना। छठा गुण है- विवेकशील और अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक होना। सातवाँ गुण अनुशासन का है। अनुशासन का मतलब है- हर काम में समय और आदेश का पालन करना।

(i) सेवा-भाव का मतलब क्या है?

....

(ii) सहिष्णुता का मतलब क्या है?

....

(iii) अच्छा इंसान बनने के लिए छठा गुण क्या है?

....

(iv) अनुशासन किसे कहते है?

....

9. अगर आप भारत के वित्तमंत्री होते, तो क्या-क्या करते- कल्पना कीजिए और एक अनुच्छेद लिखिए।

10. तेज़ आँधी और बारिश से हुए विनाश और उसके बाद किए गए राहत-कार्य के बारे में निम्नलिखित शब्दों का उपयोग करते हुए एक अनुच्छेद लिखिए-

ओले, अंधड़, भयानक, मकान, पेड़, खंभे, अस्त-व्यस्त, स्वयंसेवी, मिल-जुलकर, घायल, एंबुलेंस, कराहना, चीत्कार, अफ़रा-तफ़री, सहायता, संकट, जान-माल।

उत्तरमाला

1. (i) खेती-बाड़ी, बागवानी और पशुपालन का काम करता था।

(ii) घी की पूड़ी और पकवान।

(iii) क्योंकि आगे कुछ दूरी पर रेल की पटरी उखड़ी हुई थी।

(iv) अपने देश का।

(v) बड़े धर्मात्मा, सत्यप्रिय एवं न्यायप्रिय।

2. व्यर्थ = बेकार

व्यवस्था = प्रबंध / कानून एवं सुरक्षा का ध्यान रखने वाली सत्ता

वाणी = आवाज़

अतिथि	=	मेहमान
आघात	=	चोट
काग	=	कौआ
तड़ाग	=	तालाब

3. (i) गहरे
   (ii) खड़ा
   (iii) तलाश
   (iv) पट्टा
4. स्वयं कीजिए।
5. धरती = धरा, पृथ्वी अथवा अन्य सही पर्यायवाची
   आकाश = नभ, आसमान अथवा अन्य सही पर्यायवाची
6. पुरुष = स्त्री
   बकरा = बकरी
   लड़की = लड़का
   छोटा = छोटी
   बड़ी = बड़ा
7. लाठी = लाठियाँ
   गधा = गधे
   दवाई = दवाइयाँ
   साड़ी = साड़ियाँ
   रोटी = रोटियाँ
8. (i) दूसरों की मदद करने की आदत।
   (ii) हर परिस्थिति में धीरज बनाए रखना।
   (iii) विवेकशील और अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक होना।
   (iv) हर काम में समय और आदेश का पालन करना।
9. स्वयं कीजिए।
10. स्वयं कीजिए।

8

ओडिशा की यात्रा

नई-नई जगहों को देखना और उनके बारे में जानकारियाँ हासिल करना सभी को अच्छा लगता है। आपको भी अच्छा लगता होगा। आप भी किसी नई जगह जाते होंगे, तो खुशी होती होगी। हमारे देश में तो दर्शनीय जगहें इतनी अधिक हैं कि उन्हें देखने में कई साल लग जाएँ। इन जगहों की सैर करने से कई फ़ायदे भी होते हैं– नए लोग मिलते हैं, एक-दूसरे की संस्कृति की जानकारी मिलती है, परंपराओं की जानकारी मिलती है और अपने देश के इतिहास का पता चलता है। आइए, आज ओडिशा की यात्रा पर चलें।

उद्‌देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- ओडिशा के प्रसिद्‌ध दर्शनीय स्थलों के बारे में बता सकेंगे;
- किसी यात्रा का वर्णन अपने शब्दों में कर सकेंगे;
- क्रिया और उसके विभिन्न रूपों की जानकारी दे सकेंगे।

करके सीखिए

गया से लगभग 15 किलोमीटर दूर 'बोधगया' नामक तीर्थ है। गौतम बुद्‌ध ने यहाँ एक वृक्ष के नीचे तपस्या की थी। लंबी तपस्या के बाद उन्हें यहीं 'बोध' प्राप्त हुआ था। उस वृक्ष को 'बोधिवृक्ष' कहा जाता है। बौद्‌ध धर्म के प्रचार-प्रसार से बोधगया बौद्‌ध तीर्थ के रूप में प्रसिद्‌ध हो गया। चीन, म्यांमार, तिब्बत, थाईलैंड, जापान आदि देशों से हर साल हज़ारों बौद्‌ध श्रद्‌धालु यहाँ आते हैं। जहाँ बुद्‌ध ने तपस्या की थी, वहाँ विशाल 'महाबोधि' मंदिर है। मंदिर के पास अनिमेषलोचन चैत्य है। कहा जाता है कि बोध होने के बाद

सबसे पहले महात्मा बुद्ध यहीं आए थे। यहाँ बुद्ध की सोने, काँसे और पत्थर की मूर्तियाँ हैं। 'चक्रमण' बोधगया का तीसरा पवित्र स्थान है। महात्मा बुद्ध बोध प्राप्त करने के बाद लंबे समय तक यहाँ रहे थे।

आपने इस अनुच्छेद में बोधगया के बारे में कई जानकारियाँ हासिल कीं। आप अपने आसपास अथवा दूर स्थित जिस भी दर्शनीय स्थल के बारे में कुछ जानकारियाँ रखते हैं, उन्हें दूसरों को बताने के लिए एक अनुच्छेद में लिखिए–

....

....

....

....

....

....

8.1 मूल पाठ

ओडिशा देखने के लिए रोज़ मैरी जर्मनी से आई थी। वह वहाँ हिंदी पढ़ाती है। वह भुवनेश्वर, कोणार्क और पुरी देखना चाहती थी। पिछले साल रोज़ मैरी दिल्ली, जयपुर और आगरा की यात्रा के लिए आई थी। वहाँ की ऐतिहासिक इमारतों से वह बहुत प्रभावित हुई थी, इसलिए ओडिशा की यात्रा के लिए भी बहुत उत्साह में थी।

दिल्ली से हम लोग हवाई जहाज़ से भुवनेश्वर पहुँचे। मैंने उसे बताया– "भुवनेश्वर मंदिरों का शहर है। पहले इसे 'कोटिलिंग' के नाम से जाना जाता था। यहाँ का लिंगराज मंदिर बहुत प्रसिद्ध है।"

सबसे पहले हम लिंगराज मंदिर ही गए। इसका शिखर करीब 54 मीटर ऊँचा है। यह बहुत भव्य मंदिर है। मैरी को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि इतनी सुंदर कारीगरी सातवीं शताब्दी में की गई होगी। इस मंदिर को बनाने में चालीस साल लगे थे। पास में ही कार्तिकेय और पार्वती के मंदिर भी हैं। हमने उन्हें भी देखा। माता गौरी की सुंदर मूर्ति देखकर हम ठगे-से रह गए। माता गौरी की मूर्ति को सुंदर गहने पहनाए गए थे। उन्हें देखकर मैरी का मन भी गहने खरीदने के लिए मचलने लगा।

भुवनेश्वर में पत्थर और लकड़ी के अलावा सोने-चाँदी पर भी बहुत कलात्मक काम होता है। चाँदी के गहनों पर सोने का पानी चढ़ाया जाता है। जिससे ये सोने के असली गहने लगते हैं। ये गहने बहुत सस्ते ही होते हैं।

हमने जल्दी-जल्दी राजा-रानी मंदिर, अनंत वासुदेव मंदिर और लक्ष्मणेश्वर मंदिर देखे। जल्दी-जल्दी इसलिए कि इसके बाद बाज़ार जाना था, खरीददारी करने के लिए। मंदिर देखकर हम बाज़ार गए। मैरी ने बहुत से

गहने खरीदे। साड़ियाँ खरीदीं। पर उसका मन ही नहीं भर रहा था। इतने सस्ते दामों में इतनी अच्छी चीज़ें! यह देखकर उसे बहुत आश्चर्य हो रहा था।

लिंगराज मंदिर, भुवनेश्वर

अगली सुबह हम लोग टैक्सी से जगन्नाथ पुरी के लिए रवाना हुए। रास्ते में 'नंदन कानन' की एक झलक देखने के लिए रुक गए। नंदन कानन राष्ट्रीय पार्क है। यह अपनी वनस्पति की शोभा के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है। यहाँ हमें सफ़ेद शेर और मगरमच्छ देखने का मौका मिला। सफ़ेद शेर जंगलों में कम ही दिखाई देते हैं।

पुरी तक की एक घंटे की यात्रा में हमें बड़ा आनंद आया। सड़क के दोनों ओर खूब हरियाली थी। रास्ते में कई जगह रुककर हमने नारियल पानी भी पिया।

पुरी बहुत बड़ा शहर नहीं है। पर यहाँ रोज़ हज़ारों लोग आते हैं जगन्नाथ मंदिर के दर्शन करने। यह चार धामों में से एक है। बाकी तीन धाम हैं– बद्रीनाथ, द्वारका और रामेश्वरम्।

पुरी का जगन्नाथ मंदिर सन् 795 ईसवी में बना था। इसे सम्राट महाशिव गुप्त ययाति ने बनवाया था। यह मंदिर करीब 65 मीटर ऊँचा है। मंदिर बंगाल की खाड़ी के किनारे बना है। मंदिर में श्रीकृष्ण, उनकी बहन सुभद्रा और भाई बलराम की मूर्तियाँ बनी हैं। मंदिर की दीवारों पर देवी-देवताओं, यक्षों और अप्सराओं की सुंदर मूर्तियाँ बनी हैं। यह दुनिया का अकेला मंदिर है, जहाँ बहन-भाइयों की एक साथ पूजा की जाती है।

मंदिर का रसोईघर बहुत विशाल है। हर रोज़ वहाँ हज़ारों लोग भोजन करते हैं। यह 'महाप्रसाद' कहा जाता है। महाप्रसाद लेने के लिए जाति-पाँति का कोई भेदभाव नहीं किया जाता। सभी एक पंक्ति में बैठकर भोजन करते हैं। इसे दुनिया का सबसे बड़ा रसोईघर माना जाता है।

हर साल आषाढ़ के महीने में भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा निकलती है। जगन्नाथ भी कृष्ण का ही एक नाम है। इस यात्रा में तीन रथ होते हैं– एक भगवान जगन्नाथ का, एक सुभद्रा का और एक बलभद्र का। बलभद्र का रथ सबसे आगे होता है।

सभी रथ अलग-अलग ऊँचाई के होते हैं। सभी अलग रंगों के कपड़ों से ढके होते हैं। भगवान जगन्नाथ का रथ 13.5 मीटर ऊँचा होता है। यह लाल और पीले रंग के कपड़े से ढका होता है। इसमें 16 पहिए होते हैं।

कोणार्क का सूर्य मंदिर

बलभद्र का रथ लाल और हरे रंग के कपड़े से ढका होता है। इसमें 14 पहिए होते हैं। सुभद्रा का रथ लाल और काले रंग के कपड़े से ढका होता है। इसमें 12 पहिए होते हैं। रथों में बहन-भाइयों के दारु-विग्रह रखे रहते हैं। दारु-विग्रह, यानी लकड़ी की मूर्तियाँ।

यह यात्रा जगन्नाथ मंदिर से गुंडीचा मंदिर तक जाती है। यह रास्ता करीब तीन किलोमीटर लंबा है। ऐसा माना जाता है कि रथों में बैठकर भाई-बहिन अपनी मौसी के घर जाते हैं। यात्रा के 14 दिन पहले से भगवान एकांतवास करते हैं। इस दौरान भक्त उनके पास नहीं जा सकते।

शाम को हम पुरी के समुद्र तट पर गए। यहाँ से सूर्यास्त का दृश्य बहुत सुंदर दिखाई देता है। उसे देखकर कन्याकुमारी के सागर तट की याद आ गई। वहाँ का सूर्योदय और सूर्यास्त भी बहुत मनोहारी होता है।

अगले दिन करीब एक घंटे की यात्रा करके हम कोणार्क पहुँचे। यह हमारी यात्रा का आखिरी पड़ाव था। यहाँ का 'सूर्य मंदिर' बहुत प्रसिद्‌ध है। यह 13वीं शताब्दी में बना था। इसे राजा नरसिंह देव प्रथम ने बनवाया था। यह मंदिर स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है। मंदिर के द्‌वार पर सूर्य भगवान का 24 पहियों का रथ उकेरा गया है। इस रथ को सात घोड़े खींच रहे हैं। 24 पहियों के माध्यम से आज भी वहाँ काल गणना की जा सकती है। काल-गणना करना, यानी समय का पता करना। मैरी को इस बात का आश्चर्य था कि सदियों पहले भारत में विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली थी।

सूर्य मंदिर की विशालता और मूर्तिकला को देखकर आश्चर्य होता है। उस युग में आजकल जैसे यंत्र नहीं थे। फिर भी इतने बड़े-बड़े पत्थर इतनी ऊँचाई पर कैसे पहुँचाए गए होंगे! कैसे इतनी बारीकी से मूर्तियाँ बनाई गई होंगी! कोणार्क के सूर्य मंदिर की सुंदरता का वर्णन शब्दों में किया ही नहीं जा सकता। यह तो गूँगे का गुड़ है। हम देर तक घूम-घूमकर मंदिर को देखते रहे। शाम को वापस भुवनेश्वर लौटना पड़ा। वहाँ से अगले दिन सुबह हवाई जहाज़ से हमें दिल्ली जो जाना था।

शब्दार्थ

लिंगराज मंदिर	=	भुवनेश्वर स्थित शिव मंदिर
कलात्मक	=	कलापूर्ण
आश्चर्य	=	अचरज
एकातंवास	=	अकेले रहना
सूर्यास्त	=	डूबता हुआ सूरज
स्थापत्य कला	=	भवन बनाने की कला
उकेरा गया	=	नक्काशी करके बनाया गया
विशालता	=	बड़ा आकार
गूँगे का गुड़	=	जिसके बारे में बताया न जा सके

8.2 बोध-प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. भुवनेश्वर में लेखक कौन-सा मंदिर देखने सबसे पहले गया?

   (क) खतलिंग ☐ (ख) ज्योतिलिंग ☐

   (ग) लिंगराज ☐ (घ) शिवलिंग ☐

2. इनमें से कौन-सा मंदिर भुवनेश्वर में नहीं है?

   (क) अनंत वासुदेव मंदिर ☐ (ख) राजा-रानी मंदिर ☐

   (ग) लक्ष्मणेश्वर मंदिर ☐ (घ) दक्षिणेश्वर मंदिर ☐

3. कोणार्क के 'सूर्य मंदिर' के रथ में कितने पहिए हैं?

   (क) 28 ☐ (ख) 20 ☐

   (ग) 12 ☐ (घ) 24 ☐

8.3 आइए समझें

8.3.1 अंश–1

आइए, पाठ के पहले अंश को एक बार फिर ध्यान से पढ़ते हैं।

ओडिशा देखने .... आश्चर्य हो रहा था।

लेखक जर्मनी से आई रोज़ मैरी के साथ ओडिशा की यात्रा पर गया। रोज़ मैरी पहले भी भारत आ चुकी

थी। कई ऐतिहासिक इमारतों की यात्रा कर चुकी थी। वे लोग हवाई जहाज़ से भुवनेश्वर पहुँचे। लेखक ने रोज़ मैरी को बताया कि भुवनेश्वर को पहले 'कोटिलिंग' कहा जाता था।

भुवनेश्वर में लेखक और रोज़ मैरी सबसे पहले लिंगराज मंदिर गए। यह बहुत पुराना और भव्य मंदिर है। सातवीं शताब्दी में बना था। बनने में चालीस साल लगे थे। इस मंदिर में बहुत सुंदर मूर्तियाँ हैं। यहीं पार्वती और कार्तिकेय के मंदिर भी हैं। माता गौरी की मूर्ति के गहने देखकर रोज़ मैरी की भी गहने खरीदने की इच्छा हुई। मंदिर देखने के बाद लेखक और रोज़ मैरी बाज़ार गए। वहाँ से उन्होंने गहने और साड़ियाँ खरीदीं।

लेखक बताता है कि उन्होंने राजा-रानी मंदिर, अनंत वासुदेव मंदिर और लक्ष्मणेश्वर मंदिर के भी दर्शन किए। लेखक भुवनेश्वर के कलात्मक काम के बारे में भी बताता है। वहाँ पत्थर, लकड़ी और सोने-चाँदी का काम बहुत अच्छा होता है। चाँदी के गहनों पर सोने का पानी चढ़ाया जाता है। ये गहने बहुत खूबसूरत होते हैं और सस्ते भी।

इस अंश में लेखक ने भुवनेश्वर के मंदिरों की बहुलता, भव्यता और बेजोड़ स्थापत्य कला की ओर ध्यान आकर्षित किया है। इसके अलावा इस क्षेत्र की कला और शिक्षा संबंधी खूबियों के बारे में भी बताया है। जब किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा का वृत्तांत लिखा जाता है, तो वहाँ की संस्कृति, इतिहास और कला-शिल्प तथा बाज़ार और जन-जीवन का भी वर्णन करते हैं।

पाठगत प्रश्न-8.1

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

लिंगराज मंदिर को बनाने में कितने साल लगे?

(क) बीस साल ☐ (ख) तीस साल ☐

(ग) दस साल ☐ (घ) चालीस साल ☐

2. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर वाक्य पूरे कीजिए :

(i) भुवनेश्वर .... का शहर है। (महलों / मंदिरों)

(ii) भुवनेश्वर में .... का कलात्मक काम होता है। (सोने-चाँदी / हीरे-मोती)

(iii) रोज़ मैरी ने गहने और .... खरीदीं। (मूर्तियाँ / साड़ियाँ)

(iv) पुरी का जगन्नाथ मंदिर .... में बना था। (सन् 795 / सन् 695)

8.3.2 अंश–2

अब पाठ के दूसरे अंश को एक बार फिर ध्यान से पढ़ते हैं।

अगली सुबह .... मनोहारी होता है।

पाठ के इस हिस्से में लेखक ने जगन्नाथ पुरी की यात्रा के बारे में बताया है। लेखक और रोज़ मैरी ने भुवनेश्वर से पुरी जाते समय रास्ते में 'नंदन कानन' राष्ट्रीय पार्क भी देखा। यहाँ लेखक को सफ़ेद शेर और मगरमच्छ देखने का भी मौका मिला। यहाँ लेखक ने एक जानकारी दी है कि सफ़ेद शेर अब कम ही देखने को मिलते हैं यानी इनकी संख्या बहुत घट गई है।

आगे लेखक ने पुरी के बारे में बताया है कि यह देश के चार धामों में से एक है। चार धाम हिंदुओं के सर्वाधिक मान्य तीर्थ–स्थल हैं। ये देश के चार कोनों में बने हैं– पूर्व में जगन्नाथपुरी, उत्तर में बद्रीनाथ, पश्चिम में द्वारका और दक्षिण में रामेश्वरम्। भारत की सीमाओं में उत्तर में हिमालय है, जहाँ बद्रीनाथ धाम है। शेष तीनों दिशाओं में समुद्र है, अतः शेष तीनों धाम समुद्र के तट पर हैं। पुरी का जगन्नाथ मंदिर प्रसिद्ध है। लेखक उस मंदिर के बारे में बताता है कि यह सन् 795 में बना था। इसे सम्राट महाशिव गुप्त ययाति ने बनवाया था। यह बंगाल की खाड़ी के किनारे बना है। लेखक बताता है कि दुनिया में केवल इसी मंदिर में बहन और भाई साथ पूजे जाते हैं। यहाँ श्रीकृष्ण, उनकी बहन सुभद्रा और भाई बलराम की मूर्तियाँ हैं। कई और मूर्तियाँ भी लेखक ने यहाँ देखीं।

लेखक ने जगन्नाथ मंदिर के रसोईघर का भी विवरण दिया है। यहाँ रोज़ महाप्रसाद बनता है। जात–पाँत के भेदभाव के बिना हज़ारों लोग साथ–साथ प्रसाद पाते हैं। लेखक बताता है कि इसे दुनिया का सबसे बड़ा रसोईघर माना जाता है।

इसके बाद लेखक भगवान जगन्नाथ की रथ–यात्रा के बारे में बताता है। इस दिन भगवान जगन्नाथ, सुभद्रा और बलराम अपने–अपने रथों में बैठकर अपनी मौसी के घर जाते हैं। सभी रथ अलग–अलग आकारों के होते हैं। अलग–अलग तरह से सजे होते हैं। इन रथों में श्रीकृष्ण, सुभद्रा और बलराम की लकड़ी की मूर्तियाँ रहती हैं। यह यात्रा गुंडीचा मंदिर तक जाती है। लेखक ने भगवान के एकातंवास के बारे में भी बताया है। इस यात्रा से चौदह दिन पहले से मंदिर के कपाट बंद कर दिए जाते हैं। इस समय भक्त भी उनके दर्शन नहीं कर सकते।

पुरी में समुद्र तट से सूर्यास्त देखने का भी लेखक ने विवरण दिया है। यहाँ के सूर्यास्त को देखकर लेखक को कन्याकुमारी के सूर्यास्त की याद आती है। वह यहाँ हमें यह जानकारी भी देता है कि कन्याकुमारी में सूर्योदय और सूर्यास्त दोनों देखे जा सकते हैं। कन्याकुमारी हमारे देश के नक्शे के निचले नुकीले हिस्से यानी दक्षिण दिशा के अंतिम भू–भाग में है। इसके तीन ओर तीन समुद्र हैं, अतः हम सूर्य से पश्चिम तक अपनी गर्दन घुमाकर समुद्र को देख सकते हैं। इसीलिए, यह भारत में इकलौती जगह है, जहाँ समुद्र से सूर्य को उगते और उसी में अस्त होते देखा जा सकता है।

पाठगत प्रश्न-8.2

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर वाक्य पूरे कीजिए :

(i) अब जंगलों में सफ़ेद शेर .... मिलते हैं। (कम / अधिक)

(ii) जगन्नाथ पुरी .... में से एक है। (चार धामों / बारह ज्योतिर्लिंगों)

(iii) भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा हर वर्ष .... महीने में निकलती है। (भादों / आषाढ़)

(iv) जगन्नाथ मंदिर सम्राट .... ने बनवाया था।

(नरसिंह देव / महाशिव गुप्त ययाति)

(v) जगन्नाथ पुरी मंदिर के रसोईघर को .... का सबसे बड़ा रसोईघर माना जाता है। (भारत / दुनिया)

2. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न के उत्तर दीजिए :

(i) नंदन कानन में लेखक किस जानवर को देखकर उत्साहित हुआ-

(क) जिराफ़ ☐ (ख) भालू ☐

(ग) सफ़ेद शेर ☐ (घ) लंगूर ☐

(ii) जगन्नाथ धाम भारत की किस दिशा में है-

(क) पूर्व ☐ (ख) पश्चिम ☐

(ग) उत्तर ☐ (घ) दक्षिण ☐

8.3.3 अंश-3

अब पाठ के आखिरी अंश को एक बार फिर ध्यान से पढ़ते हैं।

अगले दिन .... जो जाना था।

अपनी ओडिशा यात्रा के अंत में लेखक कोणार्क जाता है। यहाँ लेखक और रोज़ मैरी 'सूर्य मंदिर' देखने जाते हैं। यह सूर्य मंदिर बहुत प्रसिद्ध है। लेखक बताता है कि सूर्य मंदिर में भगवान सूर्य का 24 पहियों का रथ भी उकेरा गया है। इस रथ को सात घोड़े खींच रहे हैं। लेखक ने जानकारी दी है कि इन पहियों के माध्यम से आज भी समय का सही पता लगाया जा सकता है। यह जानकर रोज़ मैरी को बहुत अचरज होता है। अचरज इसलिए कि सैकड़ों साल पहले भारत में विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली थी। लेखक ने मंदिर का इतिहास भी बताया है। यह मंदिर राजा नरसिंह देव प्रथम ने तेरहवीं शताब्दी में बनवाया था।

सूर्य मंदिर इतना विशाल और इतना कलात्मक है कि लेखक को आश्चर्य होता है। इस बात का भी आश्चर्य होता है कि तब आज जैसी मशीनें नहीं थीं, फिर भी इतना बड़ा मंदिर बना। इतनी बारीकी से मूर्तियाँ बनीं।

पाठगत प्रश्न-8.3

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

(i) कोणार्क में कौन-सा प्रसिद्ध मंदिर है?

(क) शिव मंदिर ☐ (ख) गौरी मंदिर ☐

(ग) सूर्य मंदिर ☐ (घ) ब्रह्मा मंदिर ☐

2. सर्वाधिक उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए :

(i) सूर्य के रथ को .... घोड़े खींच रहे हैं। (सात / चौबीस)

(ii) सूर्य मंदिर .... शताब्दी में बना था। (8वीं / 13वीं)

(iii) पाठ में सूर्य मंदिर की .... और मूर्तिकला के विषय में बताया गया है। (चित्रकला / स्थापत्य कला)

8.4 भाषा-प्रयोग

यह एक यात्रा-वृत्तांत है इसलिए शैली भी विवरणात्मक है। भाषा सरल और सहज है। भाषा को रोचक बनाने के लिए कुछ जगहों पर मुहावरों का प्रयोग भी किया गया है; जैसे- 'ठगे से रह गए' और 'गूँगे का गुड़'।

क्रिया और उसके रूप

इस पाठ में ये वाक्य आए हैं–

रोज़ मैरी जर्मनी से आई थी।

वह वहाँ हिंदी पढ़ाती है।

हम लोग हवाई जहाज़ से भुवनेश्वर पहुँचे।

इन वाक्यों में 'आई थी', 'पढ़ाती है', 'पहुँचे' शब्द आए हैं। इनसे किसी काम के किए जाने का पता चलता है। पहले वाक्य में 'आने के' कार्य का पता चलता है। दूसरे वाक्य में 'पढ़ाने के' और तीसरे वाक्य में 'पहुँचने के' कार्य का पता चलता है।

अब इन वाक्यों को पढ़िए–

भुवनेश्वर मंदिरों का शहर है।

भुवनेश्वर को पहले 'कोटिलिंग' नाम से जाना जाता था।

ये गहने बहुत सस्ते भी होते हैं।

इन वाक्यों में 'है', 'था', 'हैं' शब्द आए हैं। ये भी क्रिया शब्द हैं। इनसे किसी काम के होने का ज्ञान होता है।

जिन शब्दों से किसी काम के किए जाने या होने का पता लगे, उन्हें क्रिया कहते हैं।

क्रिया के भेद

कर्म की दृष्टि से क्रिया के दो भेद होते हैं–

(क) अकर्मक क्रिया (ख) सकर्मक क्रिया

अकर्मक क्रिया– जो क्रिया कर्म से जुड़ी नहीं होती या जिसका कार्य केवल कर्ता तक ही सीमित रहे, वह 'अकर्मक क्रिया' कहलाती है।

जैसे– मयंक टहल रहा है।

रोज़ मैरी हँसने लगी।

इन वाक्यों में कार्य केवल कर्ता तक ही सीमित है इसलिए इनकी क्रिया अकर्मक है।

सकर्मक क्रिया– जिस क्रिया का फल कर्ता के अलावा किसी दूसरे पर भी पड़ता है, वह 'सकर्मक क्रिया' कहलाती है।

जैसे– माया ने पानी भर दिया है।

अलका कहानी पढ़ रही है।

इन वाक्यों में क्रिया सिर्फ़ कर्ता तक ही सीमित नहीं है, किसी और पर भी उसका असर पड़ रहा है। पहले वाक्य में भरने का काम करने वाली माया है, अतः वह कर्ता है किंतु, भरने के काम का असर 'पानी' पर भी पड़ रहा है इसलिए वह 'भरना' क्रिया का कर्म है। दूसरे वाक्य में अलका कर्ता है, पर, 'पढ़ना' क्रिया का असर 'कहानी' पर भी पड़ रहा है इसलिए 'पढ़ रही है' क्रिया का कर्म 'कहानी' है।

कैसे पहचानें?

क्रिया सकर्मक है या अकर्मक, इसकी एक आसान पहचान है। अगर क्रिया और उसके कर्ता के बीच 'क्या' या 'किसे' लगाकर प्रश्न किया जाए और उत्तर मिल जाए या उत्तर के मिलने की संभावना हो, तो क्रिया सकर्मक होगी। यदि उत्तर न मिले और न ही उसके मिलने की संभावना हो, तो अकर्मकं।

'राम पुस्तक पढ़ता है'– इस वाक्य में 'राम' और 'पढ़ता है' के बीच 'क्या' लगाकर पूछा जाए कि राम क्या पढ़ता है? तो उत्तर निकलेगा– 'पुस्तक'।

यह सकर्मक क्रिया है।

'दीप्ति खा रही है'– इस वाक्य में प्रश्न किया जाए कि दीप्ति क्या खा रही है? तो उत्तर नहीं मिलेगा, पर उत्तर की संभावना मौजूद है– फल, पापड़, चटनी... आदि। अतः इस वाक्य 'खाना' क्रिया का कर्म उपस्थित न होने पर भी वह सकर्मक क्रिया है।

अब दूसरा वाक्य लीजिए– महेन्द्र हँस रहा है।

अगर प्रश्न करें कि 'महेन्द्र क्या हँस रहा है?' इसका कोई उत्तर नहीं है, न ही हो सकता है।

अत: 'हँसना' अकर्मक क्रिया है।

क्रिया के काल

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–

- मैंने मक्का बोई थी।
- मैं मक्का बो रहा हूँ।
- मैं मक्का बोऊँगा।

पहले वाक्य में मक्का बोने का काम पहले किया जा चुका है। दूसरे वाक्य में काम इस समय किया जा रहा है और तीसरे वाक्य में काम अभी तक किया नहीं गया है, भविष्य में किया जाएगा। इन बातों का पता लगता है– क्रिया के रूपों से–

बोई थी – काम पहले किया जा चुका।

बो रहा हूँ – काम अभी चल रहा है।

बोऊँगा – काम आगे कभी होगा।

क्रिया के जिस रूप से काम के 'किए जाने' अथवा 'होने' का पता लगता है, उसे **काल** कहते हैं।

काल के भेद

काल के प्रमुख भेद तीन होते हैं–

- काम किया गया या हो गया – **भूतकाल** – (बीता हुआ)
- काम किया जा रहा है या हो रहा है – **वर्तमान काल** (इस समय)
- काम किया जाएगा या होगा – **भविष्यत् काल** – (आगे कभी)

इन तीन कालों के भी काम की स्थिति (काम के चल रहे होने, हो चुकने आदि) के अनुसार अनेक भेद होते हैं; जिनके बारे में आप बाद में जानेंगे। यहाँ इन कालों के कुछ उदाहरण देखिए :

भूतकाल

- एक जंगल में एक शेर था।
- शेर को भूख लगी।
- वह तालाब की ओर गया।
- वहाँ बहुत से जानवर पानी पी रहे थे।
- एक जानवर को दबोच लिया।
- उसने छलाँग लगा दी।

वर्तमान काल

- मैं भारत में रहता हूँ।
- भारत एक महान देश है।
- मेरा देश तरक्की कर रहा है।
- इस तरक्की में मैं और मेरे सहयोगी भी शामिल हैं।
- मैं अपना काम मन लगाकर करता हूँ।
- अपने आसपास सफ़ाई का ध्यान रखता हूँ।

भविष्यत् काल

- तुम कब आओगे?
- क्या मैं प्रतीक्षा ही करता रहूँगा?
- तुम्हारे आने पर ही मुझे चैन मिलेगा।
- मैं तुमसे अपने मन की बातें कहूँगा।
- हम दोनों सुबह-शाम सैर पर निकलेंगे।
- हमारे दिन सुख से कटेंगे।

पाठगत प्रश्न-8.4

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अकर्मक क्रिया होती है, जहाँ–

   (क) क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है। ☐

   (ख) क्रिया का कर्म वाक्य में मौजूद होता है। ☐

   (ग) क्रिया का कर्म वाक्य में नहीं होता। ☐

   (घ) क्रिया का कर्म नहीं होता और न ही संभव होता। ☐

2. क्रिया के जिस रूप से काम के संपन्न हो चुकने का पता लगता है, उसे कहा जाएगा–

   (क) भविष्यत् काल ☐ (ख) भूतकाल ☐

   (ग) वर्तमान काल ☐ (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं ☐

8.5 आपने क्या सीखा

- किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा के विवरण को यात्रा-वृत्तांत कहते हैं।
- यात्रा-वृत्तांत में वहाँ की संस्कृति, इतिहास, कला, शिल्प, बाज़ार और जन-जीवन का वर्णन किया जाता है।
- हिंदुओं के चार धाम भारत के चार छोरों पर स्थित हैं- पूर्व में जगन्नाथ, पश्चिम में द्वारका, उत्तर में बद्रीनाथ और दक्षिण में रामेश्वरम्।
- भुवनेश्वर ओडिसा की राजधानी है और यहाँ अनेक भव्य, कलात्मक और बेजोड़ स्थापत्य-कला वाले मंदिर हैं।

- ओडिसा में पत्थर, लकड़ी और सोने-चाँदी की कलात्मक वस्तुएँ बनाई जाती हैं।
- पुरी में कृष्ण, बलराम और सुभद्रा की एक साथ पूजा होती है और हर वर्ष आषाढ़ के महीने में यहाँ रथयात्रा का आयोजन होता है।
- कोणार्क में 13वीं शताब्दी का बना अति विशाल, भव्य और कलात्मक सूर्य मंदिर है। इससे काल-गणना के विषय में प्राचीन भारत की तरक्की का पता लगता है।
- जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का पता लगता है, उन्हें क्रिया कहते हैं।
- कर्म की दृष्टि से क्रिया के दो भेद होते हैं– अकर्मक क्रिया और सकर्मक क्रिया।
- क्रिया के प्रमुख काल तीन हैं– भूत काल, वर्तमान काल और भविष्यत् काल।

8.6 योग्यता-विस्तार

- आपने भी किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा की होगी। उस यात्रा का विवरण अपने शब्दों में लिखिए।
- अन्य यात्रा-वृत्तांत पढ़िए। हिंदी के कुछ प्रमुख यात्रा-वृत्तांत निम्नलिखित हैं–

मेरी जीवन-यात्रा – राहुल सांकृत्यायन

घुमक्कड़शास्त्र – राहुल सांकृत्यायन

अरे यायावर रहेगा याद – अज्ञेय

एक बूँद सहसा उछली – अज्ञेय

पैरों में पंख बाँधकर – रामवृक्ष बेनीपुरी

सौंदर्य की नदी नर्मदा – अमृतलाल वेगड़

8.7 पाठांत प्रश्न

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प के आगे (✓) का निशान लगाइए :

(i) कोणार्क का मंदिर किसने बनवाया था?

(क) सम्राट महाशिव गुप्त ने ☐ (ख) राजा नरसिंह देव प्रथम ने ☐

(ग) सम्राट अशोक ने ☐ (घ) चंद्रगुप्त मौर्य ने ☐

(ii) ओडिशा में हिंदुओं का कौन-सा धाम है?

(क) द्वारका ☐ (ख) रामेश्वरम् ☐

(ग) पुरी ☐ (घ) बद्रीनाथ ☐

(iii) रथयात्रा में बलभद्र का रथ किस-किस रंग के कपड़े से ढका होता है?

(क) लाल और पीले ☐ (ख) लाल और काले ☐

(ग) लाल और हरे ☐ (घ) लाल और नीले ☐

(iv) नंदन कानन किसलिए प्रसिद्ध है?

(क) वनस्पति की शोभा के लिए ☐

(ख) बर्फ़ीले पहाड़ों के लिए ☐

(ग) छोटी-छोटी झीलों के लिए ☐

(घ) पुराने मंदिरों के लिए ☐

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(i) लिंगराज मंदिर कहाँ है?

....

(ii) भुवनेश्वर को पहले किस नाम से जाना जाता था?

....

(iii) रथयात्रा किस महीने में निकलती है?

....

(iv) कोणार्क में कौन-सा प्रसिद्ध मंदिर है?

....

(v) सूर्यदेव के रथ में कितने पहिए हैं?

....

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(i) मनमोहक = ...

(ii) इमारत = ...

(iii) विशालतम = ...

(iv भेदभाव = ...

(v) पर्यटक = ...

4. निम्नलिखित वाक्यों में कौन-सी क्रिया है?

(i) बिटिया खेल रही है। (अकर्मक / सकर्मक)

(ii) महेंद्र सो रहा है। (अकर्मक / सकर्मक)

(iii) अब्दुल किताब पढ़ रहा है। (अकर्मक / सकर्मक)

(iv) मैरी गाना गा रही है। (अकर्मक / सकर्मक)

5. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर उनका काल बताइए :

(i) वह तो कब का चला गया! ....

(ii) शायद बारिश हो और ओले पड़ें! ....

(iii) मैं पिता जी की हर बात माना करता था। ....

(iv) तुम भी हमारे साथ चलो। ....

(v) मैं टहलने जाया करूँगा। ....

(vi) अभी तो मैच चल ही रहा है। ....

6. पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

हमारे देश में बहुत-से दर्शनीय स्थल हैं। पहाड़ हैं, समुद्री किनारे हैं, रेगिस्तान है, धार्मिक स्थल हैं, ऐतिहासिक इमारतें हैं। दुनियाभर के लोग इन जगहों को देखने के लिए आते हैं।

इन जगहों पर जाकर खुशी होती है। नया अनुभव होता है, पर कई लोग ऐसे भी हैं, जो इन जगहों को नुकसान पहुँचाते हैं। पुरानी इमारतों पर कुछ भी लिख देते हैं, घूमने आए लोगों से बदसलूकी करते हैं। इधर-उधर गंदगी फैला देते हैं। इससे हमारे देश की छवि खराब होती है। हमारी धरोहरों को नुकसान होता है।

प्रकृति ने हमारे देश को सुंदरता दी है। हम सबकी ज़िम्मेदारी है कि इसे सुरक्षित रखें। साफ़-सुथरा रखें। दुनिया में इसकी अच्छी छवि बनाएँ।

(i) दर्शनीय स्थलों को लोग कैसे नुकसान पहुँचाते हैं?

....

....

(ii) दर्शनीय स्थलों की सुंदरता बनी रहे, इसके लिए हमारी क्या ज़िम्मेदारी है?

....

....

8.8 उत्तरमाला

बोध-प्रश्न

1. (ग) लिंगराज
2. (घ) दक्षिणेश्वर मंदिर
3. (घ) 24

पाठगत प्रश्न-8.1

1. (घ) चालीस साल
2. (i) मंदिरों (ii) सोने-चाँदी
   (iii) साड़ियाँ (iv) सन् 795

पाठगत प्रश्न-8.2

1. (i) कम (ii) चार धामों (iii) आषाढ़
   (iv) महाशिव गुप्त ययाति (vi) दुनिया
2. (ग) सफ़ेद शेर
3. (क) पूर्व

पाठगत प्रश्न-8.3

1. (ग) सूर्य मंदिर
2. (i) सात
   (ii) 13वीं
   (iii) स्थापत्य कला

पाठगत प्रश्न-8.4

1. (घ) क्रिया का कर्म नहीं होता और न ही संभव होता
2. (ख) भूतकाल

❀ ❀ ❀

9

शहीद अशफ़ाक उल्ला खाँ

हमारे देश पर लंबे समय तक अंग्रेज़ों ने शासन किया। सन् 1947 ई. में हमें आज़ादी मिली। पर यह आज़ादी इतनी आसानी से नहीं मिली। न जाने कितने लोगों ने इसके लिए अपना बलिदान दिया; इनमें बूढ़े-जवान, स्त्रियाँ, बच्चे सभी शामिल थे। देश के क्रांतिकारी 'इंकलाब ज़िंदाबाद' का नारा लगाते हुए फ़ाँसी पर चढ़ गए। ऐसे क्रांतिकारियों के बारे में आपने ज़रूर सुना होगा। ऐसे ही एक क्रांतिकारी थे, अशफ़ाक उल्ला खाँ। आइए, इस पाठ में हम उनके बारे में जानें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- शहीद अशफ़ाक उल्ला खाँ के चरित्र की विशेषताएँ बता सकेंगे;
- आज़ादी की लड़ाई में उनके योगदान को रेखांकित कर सकेंगे;
- शहीद अशफ़ाक से प्रेरणा लेकर देश के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्धारण कर सकेंगे;
- अव्यय की जानकारी दे सकेंगे।

करके सीखिए

- आपके आस-पास ऐसे लोग होंगे, जिन्होंने आज़ादी की लड़ाई में हिस्सा लेने वाले लोगों को देखा था। उनसे बात कीजिए और उनके अनुभवों को सुनकर लिखिए।
- आपने जिन स्वतंत्रता सेनानियों के नाम सुने हैं, उनमें से किन्हीं दो के नाम लिखिए।

  (1) .... (2) ....

9.1 मूल पाठ

"इलाही, वह दिन भी होगा, जब हम अपना राज देखेंगे, जब अपनी ही ज़मीं होगी और अपना आसमाँ होगा।"

ये पंक्तियाँ अमर शहीद अशफ़ाक उल्ला खाँ ने कही थीं। उनका जन्म 22 अक्टूबर, सन् 1900 ई. को हुआ था। वे ख़ुदापरस्त मुसलमान थे। उनका जीवन देश-प्रेम और बलिदान के रंग में रंगा था। वे हिन्दू-मुस्लिम एकता के पक्षधर थे। वे मानते थे कि दोनों धर्मों के लोग भारत माँ के बेटे हैं। इन्हें मिल-जुलकर देश की आज़ादी के लिए लड़ना चाहिए।

अशफ़ाक के पूर्वज पेशावर से आकर शाहजहाँपुर में बस गए थे। शाहजहाँपुर उत्तर प्रदेश राज्य में है। उनके पिता थे- मुहम्मद शफ़ीक़ उल्ला खाँ और माँ थीं- मज़हर उन्निसां बेग़म। वे अपने माता-पिता की पाँचवीं संतान थे। घर में वे सबसे छोटे थे, इसलिए परिवार के लाड़ले थे।

अशफ़ाक सन् 1921 ई. में क्रांतिकारियों के दल में शामिल हो गए। वहाँ वे प्रसिद्ध क्रांतिकारी पंडित रामप्रसाद बिस्मिल के दाहिने हाथ बन गए। बाद में दोनों में बहुत गहरी दोस्ती हो गई। दोनों एक-दूसरे पर बहुत भरोसा करते थे।

अशफ़ाक साफ़ बात करने वाले मज़बूत इरादे के नौजवान थे। वे बहुत अनुशासनप्रिय और स्वतंत्र विचारों के थे। रामप्रसाद बिस्मिल ने काकोरी में रेलगाड़ी से सरकारी खजाना लूटने की योजना बनाई, पर अशफ़ाक ने इसका विरोध किया। ऐसा न करने के लिए ठोस वजहें भी बताईं। पर, जब दल ने योजना बना ली, तो अशफ़ाक ने सौंपे गए हर काम को पूरी मुस्तैदी से पूरा किया।

अशफ़ाक सबसे बहुत प्यार से बोलते थे और शिष्टाचार से पेश आते थे। उनसे मिलने वाले उनके प्रशंसक हो जाते थे। वे बहुत ज़िंदादिल इंसान थे। शायरी भी करते थे। उर्दू और फ़ारसी के अच्छे जानकार थे।

काकोरी कांड के बाद अशफ़ाक भूमिगत हो गए। इस दौरान वे घर से दूर बिहार में काम करने लगे। वहाँ शायरी के कारण उन्हें खूब आदर मिला। वे अपना काम बहुत ध्यान से करते थे। जहाँ वे काम कर रहे थे, वहाँ का इंज़ीनियर भी शायर-मिज़ाज था। इस कारण दोनों में अच्छी दोस्ती हो गई।

अशफ़ाक के मन में भी इंज़ीनियर बनने की इच्छा पैदा हुई। इसके लिए प्रशिक्षण ज़रूरी था और प्रशिक्षण के लिए बाहर जाना ज़रूरी था। उन्होंने तय किया वे कि रूस जाकर इंज़ीनियरिंग पढ़ेंगे। इसके लिए पासपोर्ट आदि बनवाने की गरज़ से वे दिल्ली आए। यहाँ अपने गाँव के ही रहने वाले एक मुसलमान सहपाठी के घर पर ठहरे। पर इस दोस्त ने इनाम के लालच में इन्हें गिरफ़्तार करवा दिया। इस तरह न तो मज़हब काम आया, न एक गाँव का होना और न ही सहपाठी होना। इस दग़ाबाज ने अपने ही मित्र को पुलिस के हवाले कर दिया।

जब वे जेल में थे तो एक दिन कृपाशंकर हजेला उनसे मिलने आए। उनके साथ अशफ़ाक के दो बड़े भाई और भतीजे भी मुलाकात करने पहुँचे। अशफ़ाक को देखकर दोनों भाइयों की आँखों में आँसू आ गए। भतीजे भी रोने लगे। तब शिकायत के लहजे में अशफ़ाक ने कहा– "हजेला साहब, आप इन लोगों को क्यों लाए? यह रोने का मौका है कि खुश होने का? आप इन्हें बताइए कि खुदीराम बोस और सैकड़ों दीगर फ़ाँसी के तख़्ते पर चढ़कर यह सबूत दे चुके हैं कि वे भारत माता के बेटे थे। भाई, मुझे भी फ़ाँसी पर चढ़कर सबूत देने दो। मैं खुशनसीब हूँ, जिसे यह मौका मिल रहा है।"

जेल में अशफ़ाक को तोड़ने की बहुत कोशिश की गई। पर वे कहाँ मानने वाले थे। अशफ़ाक को अंग्रेज़ों ने सरकारी गवाह बनने का भी लालच दिया। पर वे नहीं माने। तब पुलिस ने एक हथकंडा अपनाया। उनकी माँ को उनके पास भेजा। फ़ाँसी की सजा पाए बेटे से वे बोलीं– "तू अगर मेरी बात नहीं मानेगा, तो मैं तुझे अपना दूध नहीं बक्शूँगी।" अशफ़ाक का जवाब था– "अम्मी, अगर आप नहीं बख़्शेंगी, तो आपकी मर्ज़ी। मगर मादरे वतन भारतमाता अपना दूध ज़रूर बख़्श देगी।" माँ आगे कुछ न कह सकी।

आखिर 19 दिसम्बर, 1927 ई. का दिन आ पहुँचा। इसी दिन अशफ़ाक को फ़ाँसी दी जानी थी। उन्होंने अपने लिए खास तौर पर मँगवाए गए नए कपड़े पहने। कपड़ों पर इत्र छिड़का। फिर क़ुरान शरीफ़ का बस्ता कंधे पर टाँगकर कलमा पढ़ते हुए खुशी-खुशी फ़ाँसी के तख़्ते की तरफ चल दिए। फ़ाँसी के तख़्ते पर चढ़ने से पहले अशफ़ाक ने उसको चूम लिया। फिर लटकती हुए रस्सी की ओर देखकर बोले– "मेरी महबूबा, मुझे मालूम था कि निकाह के लिए तू मेरा इंतज़ार कर रही थी। ले, मैं आ गया। हम दोनों अब इस तरह मिलेंगे कि कोई हमें जुदा नहीं कर सकेगा।" यह कहते हुए वह क्रांतिवीर फ़ाँसी के फंदे पर झूल गया।

अशफ़ाक को फ़ाँसी पर चढ़ने का कोई रंज नहीं था। फ़ाँसी को तो उन्होंने खुदा की मर्ज़ी माना। इसी ने तो उन्हें आज़ादी के लिए शहीद होने वाले रणबाँकुरे का गौरव दिया था।

शब्दार्थ

इलाही	=	अल्लाह	सहपाठी	=	साथ पढ़ने वाला
पक्षधर	=	तरफ़दारी करने वाला	दगाबाज़	=	धोखा देने वाला
अनुशासनप्रिय	=	अनुशासन को पसंद करने वाले	दीगर	=	दूसरे
			कलमा	=	इस्लामिक आस्था को व्यक्त करने वाला वाक्य (नहीं है कोई ईश्वर के सिवा)
शिष्टाचार	=	अच्छा व्यवहार			
प्रशंसक	=	तारीफ़ करने वाला			
भूमिगत होना	=	छिप जाना	जुदा	=	अलग

9.2 बोध-प्रश्न

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर वाक्य पूरा कीजिए :

(क) अशफ़ाक .... इरादों वाले नौजवान थे। (मज़बूत / कमज़ोर)

(ख) अशफ़ाक को फ़ाँसी पर चढ़ने का कोई .... नहीं था। (शौक / रंज)

(ग) भूमिगत होकर अशफ़ाक .... में काम करने लगे। (बिहार / दिल्ली)

2. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

कौन-सी बात अशफ़ाक के चरित्र से मेल नहीं खाती :

(क) अनुशासनप्रियता ☐ (ख) स्वतंत्र विचार ☐

(ग) गोल-मोल बातें करना ☐ (घ) ज़िन्दादिल ☐

9.3 आइए समझें

9.3.1 अंश-1

इलाही, वह दिन .... मुस्तैदी से किया।

हमारे देश पर अंग्रेज़ों ने करीब दो सौ साल तक शासन किया। वे यहाँ व्यापारी के रूप में आए थे। फिर धीरे-धीरे उन्होंने पूरे देश पर अधिकार कर लिया। उनकी नीतियों से जनता बहुत परेशान हो गई थी। देश के कोने-कोने से विदेशी शासन के खिलाफ़ हमेशा आवाज़ें उठती रहती थीं। देश के नौजवान देश की आज़ादी का सपना देखते थे। ऐसे ही एक नौजवान थे- अशफ़ाक उल्ला खाँ।

अशफ़ाक देश की आज़ादी का सपना देखते थे। उनका यह पक्का विश्वास था कि एक दिन ऐसा आएगा, जब देश पर हमारा अपना शासन होगा और विदेशी शासन का खात्मा होगा। वे हमेशा यह कामना करते रहते थे कि भविष्य में हमारे देश की ज़मीन और उसके आसमान पर हमारा ही राज हो। यह गुलामी के अंत का भी स्वप्न है।

इस अंश से अशफ़ाक के व्यक्तित्व की अनेक विशेषताओं का पता चलता है। वे सच्चे मुसलमान थे– इंसानियत के लिए जीने वाले। देश-प्रेम उनकी रग-रग में बसा था। उनकी नज़र में हिन्दू और मुसलमान में कोई फ़र्क नहीं था। वे दोनों को ही भारत माँ का बेटा मानते थे। उनका मानना था कि दोनों को मिलकर भारत माँ को विदेशी शासन से आज़ाद कराना चाहिए। ये बातें आज के समय में हमारे लिए बहुत महत्त्व रखती हैं।

अशफ़ाक के पुरखे पेशावर से शाहजहाँपुर आकर बसे थे। पेशावर अब पाकिस्तान में है। शाहजहाँपुर उत्तर प्रदेश राज्य में एक ज़िला है। अशफ़ाक अपने घर में सबसे छोटे थे। हमारे घरों में सबसे छोटे बच्चे को ज़्यादा लाड़-प्यार मिलता है। सभी उसे दुलराते हैं। ऐसा ही अशफ़ाक के साथ भी था। ज़्यादा लाड़-प्यार से आमतौर पर बच्चे बिगड़ जाते हैं। अनुशासनहीन भी हो जाते हैं। पर अशफ़ाक के साथ ऐसा नहीं हुआ। उन्हें अनुशासन में रहना बहुत पसंद था। उनके व्यक्तित्व की इस विशेषता से हमें सीख मिलती है कि उद्देश्य प्राप्ति के लिए अनुशासनप्रियता का बहुत महत्त्व है।

देश की आज़ादी की धुन तो अशफ़ाक के मन में पहले से ही थी। बस, मौके की तलाश थी। सन् 1921 ई. में उन्हें वह मौका मिला। वे क्रांतिकारियों के दल में शामिल हो गए। रामप्रसाद बिस्मिल का क्रांतिवीरों में बड़ा नाम था। रामप्रसाद बिस्मिल के दल में अशफ़ाक शामिल हुए। अपने कामों, अपनी निष्ठा और देश के लिए अपने जज़्बे के कारण वे बिस्मिल के बहुत नज़दीक आ गए और उनके दाहिने हाथ बन गए। दोनों का एक ही उद्देश्य था– देश को विदेशी शासन में आज़ादी दिलाना। दोनों के विचार भी मिलते-जुलते थे। इससे दोनों में गहरी दोस्ती हो गई।

अशफ़ाक में और भी बहुत-सी विशेषताएँ थीं। वे मज़बूत इरादे वाले और अनुशासनप्रिय थे। विचारों में खुलापन था। जहाँ ज़रूरत होती थी, वे खुलकर विरोध करते थे। अगर उन्हें दल का कोई निर्णय उचित नहीं लगता था, तो उसका भी वे विरोध करते थे और उसका कारण भी बताते थे।

बिस्मिल ने जब काकोरी में रेल से सरकारी खजाना लूटने की योजना बनाई, तब भी अशफ़ाक ने विरोध किया था। यह भी बताया था कि ऐसा करना क्यों ठीक नहीं होगा। वे सिर्फ़ विरोध करने के लिए ही विरोध नहीं करते थे, उसके पीछे ठोस कारण भी होते थे। पर दल ने काकोरी में खजाना लूटने की योजना को अंतिम रूप दे दिया। तब अशफ़ाक ने अपने विरोध को दरकिनार करके पूरी मुस्तैदी से अपना काम किया। जो काम उन्हें सौंपा गया था, उसे पूरा किया। उनकी इस मुस्तैदी से ही क्रांतिकारी अपने काम में सफल हो पाए।

पाठगत प्रश्न-9.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछ गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. काकोरी में रेलगाड़ी से सरकारी खजाना लूटने की योजना किसने बनाई?

   (क) रामप्रसाद बिस्मिल ☐ (ख) खुदीराम बोस ☐

   (ग) कृपाशंकर हजेला ☐ (घ) अशफ़ाक उल्ला खाँ ☐

2. अशफ़ाक उल्ला खाँ का सपना था-

   (क) विचारों में खुलापन ☐ (ख) देश की आज़ादी ☐

   (ग) अनुशासनप्रियता ☐ (घ) सांप्रदायिक एकता ☐

9.3.2 अंश–2

आइए, अब अशफ़ाक उल्ला खाँ के स्वभाव की कुछ और विशेषताओं और उनके जीवन से संबंधित घटनाओं को जानें।

अशफ़ाक सबसे बहुत .... मौका मिल रहा है।

अशफ़ाक के स्वभाव में वे सभी विशेषताएँ थीं जो एक व्यक्ति को लोकप्रिय बनाती हैं। वे सभी से बहुत प्यार से बोलते थे, शिष्टाचार से पेश आते थे, एक ज़िन्दादिल इन्सान थे। शायरी भी करते थे। ऐसे व्यक्ति की सोहबत में सभी रहना चाहते हैं। अशफ़ाक को भी लोग बहुत चाहते थे। उनके इन्हीं गुणों के कारण जो भी उनसे मिलता, उनका प्रशंसक हो जाता था।

काकोरी कांड के बाद अशफ़ाक बिहार चले गए। वहाँ छिपकर काम करने लगे। वहाँ एक इंज़ीनियर से उनकी दोस्ती हो गई। उसके साथ रहते हुए, अशफ़ाक के मन में भी इंज़ीनियर बनने की इच्छा जागी। तब इंज़ीनियरिंग पढ़ने के लिए विदेश जाना होता था। उसके लिए पासपोर्ट आदि की ज़रूरत थी और वे पासपोर्ट बनवाने के लिए दिल्ली आ गए। यहाँ वे अपने एक दोस्त के साथ ठहरे। वह दोस्त इनके साथ पढ़ता था। इन्हीं के गाँव और इन्हीं के मज़हब का था। इसी दोस्त ने पुलिस को अशफ़ाक के दिल्ली में होने की सूचना दे दी। इनाम के लालच में उसने धोखा दे दिया और अपने ही दोस्त को गिरफ़्तार करवा दिया।

अशफ़ाक जेल भेज दिए गए। वहाँ उनके परिवार वाले उनसे मिलने आए। अशफ़ाक को जेल में बंद देखकर वे रोने लगे। अशफ़ाक को यह अच्छा नहीं लगा। उन्होंने कहा कि यह रोने का नहीं, खुश होने का मौका है। भारत माँ के सैकड़ों बेटे फ़ाँसी पर चढ़कर माँ के सच्चे सपूत होने का सबूत दे चुके हैं, तो फिर मुझे यह मौका क्यों नहीं मिलना चाहिए?

ऐसे थे अशफ़ाक उल्ला खाँ। उन्हें गर्व था कि वे अपने देश के लिए शहीद हो रहे हैं। इसे उन्होंने अपनी खुशनसीबी माना।

पाठगत प्रश्न-9.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अशफ़ाक दिल्ली आए-

   (क) इंज़ीनियरिंग करने ☐ (ख) पासपोर्ट बनवाने ☐

   (ग) भूमिगत होने ☐ (घ) ट्रेन लूटने ☐

2. इनमें से कौन-सा गुण अशफ़ाक के स्वभाव में नहीं था-

   (क) शिष्टाचार से पेश आना ☐ (ख) प्यार से बोलना ☐

   (ग) शायरी पसंद न करना ☐ (घ) ज़िन्दादिल होना ☐

9.3.3 अंश-3

जेल में अशफ़ाक .... गौरव दिया था।

अंग्रेज़ सरकार ने अशफ़ाक पर बहुत दबाव डाला कि वे अपने दूसरे साथियों के बारे में बताएँ। पर अशफ़ाक थे सच्चे देशभक्त, वे कहाँ मानते! उन्हें यह भी लालच दिया गया कि वे सरकारी गवाह बन जाएँ, तो उनकी सज़ा माफ़ हो जाएगी। पर अशफ़ाक न तो दबाव के आगे झुके, न लालच में पड़े। थक-हार कर सरकार ने उनकी माँ को उनके पास भेजा। सरकार ने सोचा होगा कि अशफ़ाक भावुक होकर माँ की बात तो मानेंगे ही। पर अशफ़ाक ने उनकी बात भी नहीं मानी। माँ द्वारा दूध का वास्ता दिए जाने पर भी वे अडिग रहे। उन्होंने कहा कि भारत माता मेरी मादरे वतन है। तुम चाहे मुझे अपना दूध न बख्शो, पर भारत माँ ज़रूर बख्शेगी।

फ़ाँसी वाले दिन भी अशफ़ाक बिल्कुल सामान्य थे। उन्होंने खासतौर से अपने लिए मँगवाए गए नए कपड़े पहने। कपड़ों पर इत्र छिड़का। क़ुरान शरीफ़ का बस्ता कंधे पर टाँगा। फिर खुशी-खुशी फ़ाँसी के तख्ते की ओर चल पड़े। फ़ाँसी की रस्सी को उन्होंने अपनी मेहबूबा कहा। यह भी कहा कि मुझे मालूम है, तू निकाह के लिए जाने कब से मेरा इन्तज़ार कर रही है। अब हम कभी अलग नहीं होंगे। 19 दिसम्बर, 1927 ई. को अशफ़ाक हँसते-हँसते फ़ाँसी पर चढ़ गए।

इस पाठ का यह अंश सर्वाधिक मार्मिक और रोमांचक है। हम सबके लिए प्रेरक भी है। यह अंश हमें बार-बार याद दिलाता है कि हमारे देश की आज़ादी में सभी धर्मों, वर्गों आदि के लोगों का योगदान रहा है।

आज जिस आज़ादी को हम भोग रहे हैं उसके पीछे इन्हीं लोगों का त्याग और बलिदान है।

पाठगत प्रश्न-9.3

1. **सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :**

   माँ ने अशफ़ाक से क्या कहा?

   (क) मैं तुझसे बात नहीं करूँगी। ☐

   (ख) मैं तुझे अपना दूध नहीं बख्शूँगी। ☐

   (ग) आज से तेरा-मेरा रिश्ता खत्म। ☐

   (घ) मुझे तुम्हारी देशभक्ति पर गर्व है। ☐

2. **सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर वाक्य पूरे कीजिए :**

   (i) अंग्रेज़ों ने अशफ़ाक को सरकारी .... बनने का लालच दिया। (अधिकारी / गवाह)

   (ii) पुलिस ने उनकी .... को उनके पास भेजा। (माँ / बहिन)

   (iii) 19 दिसम्बर, ... को अशफ़ाक को फ़ाँसी दी गई। (1926 ई. / 1927 ई.)

9.4 भाषा-प्रयोग

इस पाठ की भाषा सरल, स्पष्ट व प्रवाहमयी है। बीच-बीच में उर्दू के शब्दों का प्रयोग हुआ है, जो साधारण व सामान्य बोलचाल के हैं। इससे भाषा-प्रवाह और अधिक सुगम हो गया है। एकाध जगहों पर मुहावरों का भी प्रयोग किया गया है; जैसे- दाहिना हाथ बन जाना। मिश्रित वाक्यों का प्रयोग कम-से-कम किया गया है। इससे पाठ को पढ़ना व समझना और भी आसान हो जाता है।

इस पाठ में 'से दूर', 'बाहर', 'ध्यान से' जैसे शब्द आए हैं। इनकी विशेषता यह है कि ये किसी भी तरह के वाक्य में आएँ, इनका रूप नहीं बदलता। न तो इनका रूप स्त्रीलिंग-पुल्लिंग के साथ बदलता है; न ही भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यतकाल में। ये हमेशा एक ही रूप में वाक्यों में प्रयुक्त होते हैं।

पाठ में आए निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–

- इस दौरान वे घर <u>से दूर</u> बिहार में काम करने लगे।
- प्रशिक्षण के लिए <u>बाहर</u> जाना ज़रूरी था।
- वे अपना काम बहुत <u>ध्यान से</u> करते थे।

जिन शब्दों का रूप नहीं बदलता, हमेशा एक-सा बना रहता है, उन्हें अव्यय कहते हैं। अव्यय का अर्थ होता है, जिसका व्यय न हो या जिसमें विकार या बदलाव न आए। इन्हें 'अविकारी पद' भी कहते हैं। अव्यय वे शब्द हैं, जिनका रूप लिंग, वचन, पुरुष, काल के अनुसार नहीं बदलता।

अव्यय के पाँच भेद हैं–

(1) क्रिया विशेषण अव्यय, (2) संबंधबोधक अव्यय, (3) समुच्चयबोधक अव्यय, (4) विस्मयादिबोधक अव्यय, (5) निपात या अवधारणामूलक अव्यय।

इनमें से 'क्रिया विशेषण' और 'संबंधबोधक' अव्यय के बारे में ही हम इस पाठ में पढ़ेंगे। बाकी तीन भेदों के बारे में हम अगले पाठ में पढ़ेंगे।

1. **क्रिया विशेषण अव्यय–** जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण अव्यय कहते हैं। जैसे– आजकल, धीरे-धीरे, के पास, बिल्कुल आदि।

   क्रिया विशेषण अव्यय के चार भेद हैं–

   (i) **कालवाचक क्रिया विशेषण अव्यय–** जो शब्द क्रिया के काल या समय की विशेषता बताते हैं, उन्हें कालवाचक क्रिया विशेषण अव्यय कहते हैं; जैसे–

   तुम दिल्ली कब जाओगे?

   रेखा कल मेरे घर आई थी।

   महँगाई आजकल बढ़ती ही जा रही है।

   (ii) **स्थानवाचक क्रिया विशेषण अव्यय–** जो शब्द क्रिया के स्थान का बोध कराते हैं, यानी स्थान के बारे में बताते हैं, उन्हें स्थानवाचक क्रिया विशेषण अव्यय कहते हैं; जैसे–

   अब्दुल यहाँ रहता है।

   पिताजी बाहर गए हैं।

   तुम इधर-उधर मत जाओ।

   इतनी तेज़ धूप में कहाँ जाओगी?

   (iii) **रीतिवाचक क्रिया विशेषण अव्यय–** जो शब्द क्रिया के होने की रीति या विशेषता बताते हैं, उन्हें रीतिवाचक क्रिया विशेषण अव्यय कहते हैं; जैसे–

   कार तेज़ दौड़ती है।

   बैलगाड़ी धीरे-धीरे चलती है।

मोहन यहाँ कैसे पहुँचा?

वह बहुत ध्यान से पढ़ाई करती है।

(iv) परिमाणवाचक क्रिया विशेषण अव्यय– जो शब्द क्रिया की मात्रा या परिमाण बताते हैं, उन्हें परिमाणवाचक क्रिया विशेषण अव्यय कहते हैं; जैसे–

मैं बहुत थक गया हूँ।

थोड़ा खाओ, पर खूब चबाओ।

बंगाल में चावल अधिक खाया जाता है।

2. **संबंधबोधक अव्यय–** संबंधबोधक अव्यय अपने से पहले वाले शब्द के साथ संबंध जोड़ता है। इस शब्द से पहले किसी-न-किसी परसर्ग की ज़रूरत होती है; जैसे– से दूर, के बिना, के साथ, के कारण, के लिए, की जगह, की तरफ़ आदि।

मैं घर से दूर आ गया हूँ।

मेरे मकान के सामने मन्दिर है।

राम की अशफ़ाक के साथ गहरी दोस्ती थी।

वह बाज़ार की तरफ़ गई है।

9.5 आपने क्या सीखा

- भारत की आज़ादी के लिए सभी धर्मों एवं वर्गों के लोगों ने योगदान दिया है।
- देश की आज़ादी के लिए लड़ने वाले लोगों का जीवन बहुत कठिन और संघर्षशील रहा है।
- सुविधाओं का भोग करते समय हमें यह याद रखना चाहिए कि ये सुविधाएँ हमें देशभक्तों के बलिदान के कारण मिली हैं।
- शहीदों के जीवन से प्रेरणा लेकर हमें देश के प्रति अपना कर्त्तव्य निभाना चाहिए।
- अव्यय वे शब्द हैं, जिनका रूप लिंग, वचन, काल, पुरुष आदि के अनुसार नहीं बदलता।
- अव्यय के पाँच भेद हैं– क्रिया विशेषण अव्यय, संबंधबोधक अव्यय, समुच्चयबोधक अव्यय, विस्मयादिबोधक अव्यय, निपात या अवधारणामूलक अव्यय।
- क्रिया विशेषण अव्यय के चार भेद हैं– कालवाचक क्रिया विशेषण अव्यय, स्थानवाचक क्रिया विशेषण अव्यय, रीतिवाचक क्रिया विशेषण अव्यय, परिमाणवाचक क्रिया विशेषण अव्यय।
- संबंधबोधक अव्यय अपने से पहले वाले शब्द के साथ संबंध जोड़ता है।

9.6 योग्यता-विस्तार

- **लेखक परिचय** - इस पाठ के लेखक वीरेन्द्र मुलासी का जन्म 11 अप्रैल, 1951 को उत्तराखंड के श्रीनगर में हुआ था। वे लंबे समय से प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम से जुड़े हैं। प्रौढ़ शिक्षा प्रवेशिकाओं और पूरक पुस्तकों की रचना का उन्हें दीर्घ अनुभव है। प्रौढ़ नवसाक्षरों व सीमित भाषा ज्ञान वाले लोगों के लिए उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आकाशवाणी से बच्चों के लिए उनकी कई कहानियों का प्रसारण हो चुका है।
- क्रांतिकारियों की जीवनियाँ पढ़िए। इससे यह स्पष्ट हो जाएगा कि हमें आज़ादी आसानी से नहीं मिली थी। इसके लिए कई वीरों ने अपना बलिदान दिया था।

9.7 पाठांत प्रश्न

1. **सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :**

   भूमिगत रहने के दौरान अशफ़ाक के मन में क्या बनने की इच्छा पैदा हुई?

   (क) डॉक्टर ☐ (ख) अध्यापक ☐

   (ग) इंज़ीनियर ☐ (घ) राजनेता ☐

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

   (i) शहीद अशफ़ाक उल्ला खाँ का जन्म कब हुआ था?

   ....

   (ii) क्रांतिकारियों ने रेलगाड़ी से खजाना कहाँ लूटा था?

   ....

   (iii) अशफ़ाक रूस क्यों जाना चाहते थे?

   ....

   (iv) दोस्त ने अशफ़ाक को क्यों गिरफ्तार करवाया?

   ....

   (v) अशफ़ाक किस क्रांतिकारी के दाहिने हाथ बन गए थे?

   ....

3. अशफ़ाक उल्ला खाँ के व्यक्तित्व की पाँच विशेषताएँ लिखिए :

....

....

....

....

....

4. अव्यय किसे कहते हैं? लिखिए।

....

....

....

5. निम्नलिखित वाक्यों में से अव्यय छाँटकर लिखिए :

(i) मैं परसों वापस जाऊँगा। ....

(ii) घोड़ा सरपट दौड़ता है। ....

(ii) खूब मेहनत करो, स्वस्थ रहोगे। ....

(iv) उसके सामने तुम कहीं नहीं ठहर सके। ....

(v) प्रतिदिन नहाने से सेहत ठीक रहती है। ....

6. पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

सर आशुतोष मुखर्जी आज़ादी के आंदोलन से जुड़े थे। एक बार वे रेलगाड़ी में सफ़र कर रहे थे। उसी डिब्बे में एक अंग्रेज़ भी यात्रा कर रहा था। अंग्रेज़ भारतीयों को नीचा समझते थे। उस अंग्रेज़ को यह देखकर बहुत बुरा लगा कि एक भारतीय भी उसी के साथ यात्रा कर रहा है। जब आशुतोष मुखर्जी सो गए, तो अंग्रेज़ ने उनकी चप्पलें उठाकर खिड़की से बाहर फेंक दीं। फिर अपनी टाई और कोट उतारकर खूँटी पर टाँगा और सो गया। आशुतोष सुबह उठे, तो उन्हें अपनी चप्पलें नहीं मिलीं। वे सारा

माज़रा समझ गए। उन्होंने अंग्रेज़ का कोट खूँटी से उतारा और खिड़की से बाहर फेंक दिया। फिर उन्होंने हाथ-मुँह धोया और वापस आकर बैठ गए। जब अंग्रेज़ उठा, तो उसे अपना कोट नहीं दिखा। उसने कहा– "मेरा कोट कहाँ गया?" आशुतोष मुखर्जी ने मुस्कराते हुए कहा– "तुम्हारा कोट मेरी चप्पलें लेने गया है। तुम चाहो, तो जाकर दोनों को ले आओ।" अंग्रेज़ सिर पीटकर रह गया।

(i) अंग्रेज़ को क्या बुरा लगा?

....

(ii) अंग्रेज़ ने क्या किया?

....

(iii) सर आशुतोष मुखर्जी ने बदले में क्या किया?

....

(iv) अंग्रेज़ ने अपना सिर क्यों पीट लिया?

....

(v) उपर्युक्त अनुच्छेद का कोई उचित शीर्षक लिखिए।

....

9.8 उत्तरमाला

बोध-प्रश्न

1. (क) मज़बूत (ख) रंज (ग) बिहार

2. (ग) गोल-मोल बातें करना

पाठगत प्रश्न-9.1

1. (क) रामप्रसाद बिस्मिल

2. (ख) देश की आज़ादी

पाठगत प्रश्न-9.2

1. (ख) पासपोर्ट बनवाने
2. (ग) शायरी पसंद न करना

पाठगत प्रश्न-9.3

1. (ख) मैं तुझे अपना दूध नहीं बख्शूँगी
2. (क) गवाह (ख) माँ (ग) 1927 ई.

10

बूढ़े की गवाही

इस संसार में हर तरह के लोग हैं। एक ओर स्वार्थी, लालची और बेईमान लोगों की भरमार है, तो दूसरी ओर ईमानदार, दयालु और परोपकारी लोग भी हैं। स्वार्थी लोग केवल अपने सुख के बारे में सोचते हैं; जबकि परोपकारी और दयालु व्यक्ति दूसरों के दुख दूर करने में लगे रहते हैं। वे दूसरों के कष्ट देखकर दुखी और सुख देखकर सुखी होते हैं। इस पाठ में ऐसे ही एक दयालु और परोपकारी लड़के की कहानी दी गई है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- सामाजिक जीवन में परोपकार का महत्त्व रेखांकित कर सकेंगे;
- किए गए उपकार के बदले दूसरों का उपकार करने का महत्त्व समझा सकेंगे;
- अव्यय और उसके भेद बता सकेंगे;
- भाषा में अव्यय शब्दों की पहचान कर सकेंगे और उपयुक्त प्रयोग कर सकेंगे।

करके सीखिए

आपके आस-पास अक्सर ऐसे लोग दिखाई देते हैं, या मिल जाते हैं, जिन्हें मदद की ज़रूरत होती है। ऐसे लोगों में से किन्हीं चार के नाम या उनकी पहचान लिखिए–

1. .... 2. ....

3. .... 4. ....

10.1 मूल पाठ

बहुत समय पहले की घटना है। एक मामूली से अपराध में एक लड़का जेल में बंद हो गया। उसकी उम्र भी कोई खास नहीं थी। यही कोई 13-14 साल का रहा होगा। पढ़ने-लिखने की उम्र में जेल की कैद। यह उसके लिए असहनीय था। उसे घर के लोगों की बहुत याद आती। मन करता कि किसी तरह भागकर अपने घर पहुँच जाए, पढ़े-लिखे, कुछ काम करे। वह हर समय जेल से भागने की जुगाड़ में लगा रहता।

कुछ ही दिनों में उसे एक अच्छा मौका मिल गया। वह जेल से भाग निकला। जेल के पिछवाड़े मीलों तक फैला घना जंगल था। उसी जंगल से होकर वह गिरते-पड़ते भागा चला जा रहा था। उसे पता था कि जेल के सिपाही उसे ढूँढ़ने के लिए सब तरफ़ फैल चुके होंगे। अगर वह दुबारा पकड़ा गया, तो उसकी सज़ा और बढ़ जाएगी। भागते-भागते उसके पैर लहूलुहान हो चुके थे। कई बार ठोकर खाकर गिरा भी, लेकिन उठकर फिर भागने लगा। भागते-भागते वह बेदम हो चुका था। भूख और प्यास के मारे बुरा हाल था। फिर भी जैसे-तैसे घिसटते हुए वह आगे बढ़ रहा था।

धीरे-धीरे शाम हो चली। जंगल में अँधेरा पसरने लगा। अब उसके लिए चलना-फिरना और भी मुश्किल हो रहा था। तभी उसे दूर एक तरफ हल्की-सी रोशनी दिखाई दी। रोशनी देखकर वह समझ गया कि जंगल का किनारा आ गया है। ज़रूर वहाँ कोई घर है। वह उसी रोशनी की ओर बढ़ने लगा। वहाँ पहुँचा तो देखा, सचमुच वहाँ एक झोपड़ी थी। झोपड़ी के भीतर एक बूढ़ा आदमी और एक जवान लड़का बैठे आग ताप रहे थे।

आहट सुनकर वह बूढ़ा आदमी बाहर आया। उसने लड़के की हालत देखी। वह समझ गया कि यह कोई मुसीबत का मारा है। वह उसे सहारा देकर झोपड़ी के अंदर लाया। लड़के ने चारों तरफ़ नज़र उठाकर देखा। झोपड़ी और उसमें रहने वालों की हालत उनकी गरीबी बयान कर रही थी। उस आदमी ने लड़के से पूछा– "कौन हो बेटा? और इस हालत में कहाँ से आ रहे हो?"

लड़का सूखे होठों पर ज़बान फिराकर बोला– "बाबा, मेरा नाम देवा है। मैं जेल से भागकर आ रहा हूँ।"

"अरे! जेल से!" बूढ़े ने आश्चर्य से पूछा– "जेल तो बहुत दूर है। इतना बड़ा जंगल पार करके तुम यहाँ तक कैसे पहुँचे?"

देवा ने कहा– "बाबा, बस दुबारा पकड़े जाने के डर से बिना रुके भागता चला आ रहा हूँ। भूख और प्यास के मारे बुरा हाल है। कुछ खाने को हो, तो दे दो। बड़ी कृपा होगी।"

बूढ़ा आदमी और उसका लड़का दोनों एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे। बूढ़ा दीवार का सहारा लेकर धीरे-धीरे उठा। एक कोने में रखे घड़े से एक गिलास पानी ले आया। बिना कुछ बोले उसने गिलास देवा को पकड़ा दिया। देवा ने गट-गट करके पूरा पानी पी लिया। बूढ़े ने उसके सिर पर हाथ फेरा और कहा– "बेटा, तुम भागकर आए भी तो अभागों के घर में। यहाँ तुम्हें खाने के लिए कुछ नहीं मिलेगा। दो दिन से हम दोनों भी भूखे हैं। इस साल तो हम लगान भी नहीं चुका पाए। दो-चार दिन में हमारा छोटा-सा खेत नीलाम हो जाएगा। यह झोपड़ी भी नीलाम हो जाएगी।"

बूढ़े की कथा सुनकर देवा की आँखों में आँसू आ गए। उसकी भूख जाने कहाँ गायब हो गई। वह कुछ बोल नहीं पाया। सोच रहा था कि मुझसे ज़्यादा दुखी तो ये दोनों हैं। अगर ये लगान नहीं चुका पाए, तो इनका बचा-खुचा सहारा भी छिन जाएगा। ये कहीं के नहीं रहेंगे। वह कुछ देर चुपचाप बैठा सोचता रहा, फिर बोला– "लगान का बकाया कितना देना है बाबा?"

"लगान के चालीस रुपये हैं।" बूढ़े ने लंबी साँस छोड़ते हुए कहा।

"चालीस रुपये का इंतज़ाम तो हो जाएगा। बाबा, तुम चलो मेरे साथ।"

"कहाँ चलूँ तुम्हारे साथ?" बूढ़े ने पूछा।

"जेल।" देवा ने कहा।

जेल का नाम सुनते ही बूढ़ा आदमी घबरा गया। देवा ने कहा– "बाबा, घबराने की कोई बात नहीं है। तुम मेरे साथ चलो। मुझे पकड़कर जेल में हाज़िर करा दो। मुझे पकड़ने के लिए तुम्हें पचास रुपये इनाम में मिलेंगे। उसमें से चालीस रुपये लगान चुका देना। बचे हुए दस रुपयों से कुछ खाने-पीने की व्यवस्था कर लेना।"

देवा की बात सुनकर बूढ़े का गला भर आया। उसने कहा– "नहीं बेटा, यह तुम क्या कह रहे हो। मैं तुम्हें एक टुकड़ा रोटी तो खिला नहीं सका, उलटे फिर तुम्हें जेल पहुँचा दूँ। नहीं, नहीं। यह मुझसे बिल्कुल नहीं होगा।"

लेकिन देवा की ज़िद के आगे बूढ़े की एक नहीं चली। उसने उसे पकड़कर जेल ले जाने के लिए मज़बूर कर दिया। बूढ़े ने भरे हुए मन से देवा को रस्सियों से बाँधकर जेलर के सामने हाज़िर कर दिया। जेलर ने उसे शाबासी दी और पचास रुपये इनाम के दिए। बूढ़ा भारी मन से रुपये लेकर वहाँ से चला गया।

देवा के ऊपर जेल से भागने का मुकदमा चलाया गया। गवाह के रूप में बूढ़े आदमी को भी बुलाया गया। बूढ़ा जब कठघरे में खड़ा हुआ, तो वह देवा को देखकर भावुक हो उठा। वह अपने आप को रोक नहीं पाया। गवाही में शुरू से अंत तक की सारी सच्चाई बयान कर दी। बूढ़े का बयान सुनकर कोर्ट में मौजूद सारे लोग हक्के-बक्के रह गए। जज़ भी लड़के की दयालुता की कथा सुनकर हैरान था। उसे लगा कि ऐसे दयालु और परोपकारी बालक को सुधरने का मौका अवश्य मिलना चाहिए। अतः उसने उसे माफ़ी देकर जेल से बरी कर दिया।

शब्दार्थ

असहनीय	=	सहन न कर पाने योग्य	जुगाड़	=	तरकीब / इंतज़ाम
आश्चर्य	=	अचंभा / हैरानी	व्यवस्था	=	इंतजाम
कोर्ट	=	अदालत / न्यायालय	परोपकारी	=	दूसरों की मदद करने वाला
बरी कर देना	=	छोड़ देना			

10.2 बोध-प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. देवा कहाँ से भागा था?

   (क) घर से ☐ (ख) जेल से ☐

   (ग) न्यायालय से ☐ (घ) जंगल से ☐

2. बूढ़े आदमी के खेत और घर की नीलामी का कारण था–

   (क) चोरी करना ☐ (ख) मारपीट करना ☐

   (ग) लगान न चुका पाना ☐ (घ) देवा को शरण देना ☐

3. देवा जेल में रहते समय किस जुगाड़ में लगा रहता?

   (क) कुछ काम करने के ☐ (ख) अपराध करने के ☐

   (ग) पढ़ने-लिखने के ☐ (घ) जेल से भागने के ☐

10.3 आइए समझें

10.3.1 अंश–1

बहुत समय पहले .... नीलाम हो जाएगी।

कहानी के इस अंश में एक लड़के की उम्र, उसका जेल जाना और जेल में उसकी मनोदशा का चित्रण है; जेल से भागने का और रास्ते की कठिनाइयों का भी। इस अंश में बूढ़े और एक लड़के की दयनीय आर्थिक दशा तथा साथ ही बूढ़े के दयावान स्वभाव को दिखाकर कहानी में मार्मिकता उत्पन्न की गई है।

लड़का जेल से भागकर एक झोपड़ी में पहुँचा। झोपड़ी में एक निर्धन बूढ़ा अपने बेटे के साथ बैठा आग ताप रहा था। उसने देवा को शरण दी। परन्तु उसके घर में खाने को कुछ नहीं था। वे दोनों खुद दो दिन से भूखे थे। बूढ़े ने बताया कि वह लगान नहीं चुका पाया है। इस कारण उसका खेत नीलाम हो जाएगा। यह झोपड़ी भी नीलाम हो जाएगी।

बूढ़े आदमी के पास भले ही कुछ खाने को नहीं था, लेकिन वह था दयावान। उसने देवा को अपनापन दिया था। प्रेम से पानी पिलाया था। देवा को बड़ा दुख हुआ। जिस झोपड़ी में उसे शरण मिली थी, वह नीलाम हो जाएगी। उसने मन ही मन सोच लिया था कि इनके लिए कुछ करना चाहिए। देवा मन ही मन जो निश्चय करता है, उसकी चर्चा अगले अंश में है।

पाठगत प्रश्न-10.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. कहानी के पहले अंश में किसका उल्लेख नहीं है?

   (क) सिपाही ☐ (ख) जवान लड़का ☐

   (ग) बूढ़ा ☐ (घ) जज़ ☐

2. देवा को बूढ़े से क्या नहीं मिला?

   (क) प्रेम ☐ (ख) अपनापन ☐

   (ग) दया ☐ (घ) श्रद्धा ☐

10.3.2 अंश-2

बूढ़े की कथा सुनकर .... बिल्कुल नहीं होगा।

पिछले अंश में आप देवा के निश्चय का उल्लेख पढ़ चुके हैं। वह निश्चय था किसी भी तरह बूढ़े और उसके लड़के की सहायता करना। बूढ़े को लगान के चालीस रुपए जमा करने थे। देवा के पास तो कुछ था नहीं। अब तो बस एक ही रास्ता था कि वह फिर से जेल पहुँच जाए, जहाँ से वह इतनी मुश्किलों से भागकर आया था। देवा यह भूल ही जाता है कि वह फिर से संकट में पड़ जाएगा। उसे तो बस बूढ़े के स्नेह, प्रेम तथा दया के बदले उन्हें धन दिलवाना था।

देवा जानता था कि पुलिस उसे ढूँढ़ रही होगी। जेल से भागे हुए कैदी को पकड़ने वाले को 50 रुपए इनाम दिए जाते थे। उसने बूढ़े से कहा कि वह उसे पकड़कर पुलिस को सौंप दे तो इनाम के 50 रुपए उसे मिल जाएँगे। उसमें से वह 40 रुपए लगान भर देगा। शेष 10 रुपए से कुछ दिन के खाने-पीने का इंतज़ाम कर लेगा।

जिस तरह देवा बूढ़े के व्यवहार से प्रभावित हुआ था, वैसे ही बूढ़ा भी देवा के इस निश्चय को सुनकर भावुक हो जाता है। बूढ़े का गला भर आया। देवा तो उसकी झोपड़ी में सिर छुपाने के लिए आया था, उसे सहारे की ज़रूरत थी। अब वह बूढ़े को संकट से बचाने के लिए फिर जेल जाना चाहता है। यह उससे नहीं होगा। बूढ़े ने ऐसा करने से मना कर दिया। यहाँ हम देख सकते हैं कि दो परोपकारी व्यक्ति जब मिलते हैं तो उनके व्यवहार से कैसा मार्मिक प्रभाव उत्पन्न होता है। ये सभी को परोपकारी बनने के लिए प्रेरित करते हैं।

पाठगत प्रश्न-10.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. देवा की भूख क्यों गायब हो गई?

(क) बूढ़े द्वारा पानी पिला देने के कारण ☐

(ख) बूढ़े द्वारा स्नेह देने के कारण ☐

(ग) बूढ़े द्वारा लड़के का मुँह ताकने के कारण ☐

(घ) बूढ़े की हालत के प्रति चिंता के कारण ☐

2. देवा फिर से जेल जाने का निश्चय करता है, क्योंकि–

(क) वह भागते-भागते बुरी तरह थक चुका था। ☐

(ख) वह बूढ़े की सहायता करना चाहता था। ☐

(ग) उसे बूढ़े के घर खाना-पीना नहीं मिला था। ☐

(घ) उसे जंगल में घर जाने का रास्ता नहीं मिला था। ☐

10.3.3 अंश–3

लेकिन देवा की ज़िद .... बरी कर दिया।

आपने पढ़ा कि देवा बूढ़े से यह ज़िद करता है कि वह उसे गिरफ़्तार करवा दे। ज़िद इसलिए करता है कि वह सचमुच बूढ़े की सहायता करना चाहता है।

देवा की ज़िद से मज़बूर होकर बूढ़े ने उसे जेलर के सामने हाज़िर कर दिया। उसे इनाम के 50 रुपए मिल गए। देवा को दुबारा जेल पहुँच कर सुकून मिला। लेकिन झोपड़ी और खेत बच जाने के बाद भी बूढ़े के मन पर एक बहुत बड़ा बोझ लद गया। आप समझ रहे होंगे कि देवा को तो परोपकार करके अच्छा लग रहा है, पर बूढ़े के भीतर द्वंद्व चल रहा है, आखिर वह भी तो परोपकारी है।

देवा के ऊपर जेल से भागने का मुकदमा चला। गवाह के रूप में बूढ़े आदमी को भी बुलाया गया। देवा को देखकर वह भावुक हो गया। उसके मन पर लदा हुआ बोझ दिमाग पर हावी हो गया। वह अपने-आपको रोक नहीं पाया। सब कुछ सच-सच बयान कर दिया। उसने इस बात की परवाह नहीं की कि इसका परिणाम क्या हो सकता है।

परोपकार का प्रभाव हमेशा सकारात्मक होता है। देवा के त्याग और दयालुता की कथा सुनकर जज़ भी हैरान हो गया। उसे लगा कि देवा दिल से बुरा नहीं है; उसे सुधरने का मौका दिया जाना चाहिए। जज़ ने देवा को जेल से छोड़ दिया। बूढ़े के मन का बोझ उतर गया। देवा को आज़ादी मिल गई। इसीलिए कहते हैं, जब कोई काम नेक इरादे से किया जाए तो उसका फल भी अच्छा होता है। स्पष्ट है कि यह कहानी प्रेरणा देती है कि स्वार्थ छोड़कर ज़रूरतमंदों की सहायता करनी चाहिए।

पाठगत प्रश्न-10.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. परोपकार के लिए क्या होना ज़रूरी है?

   (क) निस्वार्थ भाव ☐ (ख) गरीबी ☐

   (ग) मन पर बोझ ☐ (घ) कर्ज़दार ☐

2. जज़ ने देवा का भला किस प्रकार किया?

   (क) बूढ़े को गवाह बनाकर ☐ (ख) पचास रुपये जुर्माना करके ☐

   (ग) सुधरने का मौका देकर ☐ (घ) उसकी कहानी सुनकर ☐

10.4 भाषा-प्रयोग

पाठ में दी गई कहानी की भाषा खड़ी बोली है, जो अत्यंत सरल, व्यावहारिक और बोलचाल की है। भाषा-शैली कहने-सुनने वाले अंदाज़ में है। किस्से, कहानी और लोककथा के लिए ऐसी भाषा-शैली अत्यंत उपयुक्त होती है। बीच-बीच में मुहावरों का प्रयोग भी किया गया है, जैसे - मुँह ताकना, सिर पर हाथ फेरना, गला भर आना, हक्का-बक्का रह जाना आदि। इससे भाषा की सुंदरता बढ़ गई है। आइए, पाठ में आए कुछ अव्यय शब्दों को समझें।

इस पाठ में आए इन वाक्यों को पढ़िए–

- झोपड़ी के भीतर एक बूढ़ा आदमी <u>और</u> एक जवान लड़का बैठे आग ताप रहे थे।
- अब उसके लिए चलना-फिरना <u>और भी</u> मुश्किल हो रहा था।
- वह समझ गया <u>कि</u> यह कोई मुसीबत का मारा है।
- "<u>अरे!</u> जेल से!" बूढ़े ने आश्चर्य से पूछा।
- अगर यह लगान नहीं चुका पाए <u>तो</u> इनका बचा-खुचा सहारा भी छिन जाएगा।

इनमें से पहले वाक्य में 'और', दूसरे में 'और भी', तीसरे में 'कि', चौथे में 'अरे!' तथा पाँचवें वाक्य में 'तो' पर ध्यान दीजिए। ये सभी अव्यय शब्द हैं। अव्यय और उसके दो भेदों के बारे में हम पिछले पाठ में पढ़ चुके हैं। इस पाठ में हम अव्यय के तीन और भेदों के बारे में पढ़ेंगे। ये भेद हैं–

1. समुच्चयबोधक अव्यय
2. विस्मयादिबोधक अव्यय
3. निपात या अवधारणामूलक अव्यय

1. **समुच्चयबोधक अव्यय –** जो अव्यय दो पदों और उपवाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। जैसे– और, कि, क्योंकि, इसलिए, अथवा, तो, किंतु।

ऊपर के पहले वाक्य में 'एक बूढ़ा आदमी', 'एक जवान लड़का' पदों को 'और' शब्द से जोड़ा गया है। यहाँ 'और' समुच्चयबोधक अव्यय है।

तीसरे वाक्य में 'वह समझ गया', 'यह कोई मुसीबत का मारा है' इन दो उपवाक्यों को 'कि' से जोड़ा गया है। यहाँ 'कि' समुच्चयबोधक अव्यय है।

समुच्चयबोधक अव्यय के कुछ अन्य उदाहरण देखिए–

- मैं आज दाल और चावल खाऊँगी।
- करीम कल बाहर नहीं जा पाया, क्योंकि उसे बुखार था।
- यदि तुम पढ़ोगी तो ज़रूर पास हो जाओगी।
- आज तेज बारिश हुई, इसलिए हम खेत पर नहीं जा पाए।

2. **विस्मयादिबोधक अव्यय –** इन अव्ययों से खुशी, घृणा, शोक, आश्चर्य आदि मन के भाव प्रकट होते हैं; जैसे– अरे!, वाह!, छिः!, शाबाश!

ये शब्द भावों के दबाव में अपने आप मुँह से निकल जाते हैं। ये वाक्य का हिस्सा नहीं होते।

ऊपर दिया गया चौथा वाक्य देखिए– "अरे! जेल से!" बूढ़े ने आश्चर्य से पूछा। इस वाक्य में 'अरे!' आश्चर्य से कहा गया है। यह विस्मयादिबोधक अव्यय है।

विस्मयादिबोधक अव्यय के कुछ उदाहरण और देखिए–

- अरे! गाड़ी का समय हो गया, तुम अभी तक गए नहीं।
- वाह! तुम कितना अच्छा लिखती हो।
- छिः! मेरे बारे में तुमने ऐसा सोचा भी कैसे?
- शाबाश! तुम जीत गई।

आइए, विभिन्न भावों को व्यक्त करने वाले कुछ विस्मयादिबोधक शब्द जानें–

- हर्ष – आहा!, वाह, धन्य हो!, शाबाश!
- शोक – आह!, ऊह!, हा!, राम राम!, त्राहि-त्रहि!
- आश्चर्य – वाह! हैं!, ऐ!, ओहो!, क्या!, वाह!
- अनुमोदन – ठीक!, अच्छा!, शाबाश!

- स्वीकार - हाँ!, जी हाँ!, अच्छा!, जी!, बहुत अच्छा!
- संबोधन - अरे!, रे!, अजी!, एजी!, हे!, क्यों!

3. **निपात अव्यय –** जो अव्यय किसी शब्द या पद के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष प्रकार का भाव या बल पैदा करते हैं, वे निपात अव्यय कहलाते हैं। इन्हें अवधारणामूलक अव्यय भी कहते हैं।

   कहानी में एक वाक्य है– 'अब उसके लिए चलना-फिरना और भी मुश्किल हो रहा था'। इस वाक्य में 'भी' जोड़कर बात पर अधिक बल दिया गया है, यानी चलना-फिरना अधिक मुश्किल हो गया था। यहाँ 'भी' निपात अव्यय है।

   निपात अव्यय के कुछ और उदाहरण देखिए–

   - मुझे कल ही जाना होगा।
   - मैंने तो कुछ नहीं किया।
   - तुम्हें यहाँ कोई जानता तक नहीं।

10.5 आपने क्या सीखा

- यदि दूसरे का दुख अपने दुख से बड़ा है तो उससे प्रभावित होना चाहिए।
- दया, प्रेम, परोपकार जैसे भाव समाज-कल्याण के लिए ज़रूरी हैं।
- परोपकार एक ऐसा भाव है जिससे सभी प्रभावित होते हैं।
- जो अव्यय दो पदों और उपवाक्यों को जोड़ते हैं, समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं।
- विस्मयादिबोधक अव्ययों से खुशी, घृणा, शोक, आश्चर्य आदि मन के भाव प्रकट होते हैं।
- किसी शब्द या पद के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष प्रकार का भाव या बल पैदा करने वाले अव्यय निपात अव्यय कहलाते हैं।

10.6 योग्यता-विस्तार

उत्तर प्रदेश में जनपद बाराबंकी के ग्राम छंदरौली में जन्मे लायकराम 'मानव' बाल साहित्यकार तथा प्रौढ़ साहित्य विशेषज्ञ के रूप में जाने जाते हैं। वे कहानी, कविता, लेख, नाटक आदि सभी विधाओं में लिख रहे हैं। बच्चों, किशोरों और नवसाक्षरों के लिए उनकी लगभग 40 पुस्तकें तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लगभग 350 रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

10.7 पाठांत प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(i) देवा जंगल में क्यों भाग रहा था?

....

(ii) बूढ़े आदमी ने देवा को खाने के लिए क्या दिया?

....

(iii) बूढ़े आदमी की क्या परेशानी थी?

....

(iv) देवा ने बूढ़े आदमी की मदद कैसे की?

....

....

2. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) देवा के ऊपर किस बात का मुकदमा चलाया गया?

(क) बूढ़े की मदद करने का ☐ (ख) घर से भागने का ☐

(ग) जेल से भागने का ☐ (घ) झूठ बोलने का ☐

(ii) गवाही के लिए किसको बुलाया गया?

(क) सिपाही को ☐ (ख) जेलर को ☐

(ग) जवान लड़के को ☐ (घ) बूढ़े आदमी को ☐

(iii) कोर्ट में मौजूद सारे लोग क्यों हक्के-बक्के रह गए?

(क) बूढ़े का बयान सुनकर ☐ (ख) बूढ़े की दशा देखकर ☐

(ग) बूढ़े की व्यथा सुनकर ☐ (घ) देवा की बुराई सुनकर ☐

3. निम्नलिखित वाक्यों में आए अव्यय छाँटकर उसे वाक्य के सामने लिखिए :

(i) तुम उठो और नहा लो। ....

(ii) वह पढ़ने में कमज़ोर था, फिर भी पास हो गया। ....

(iii) अरे वाह! तुमने अपना काम बहुत जल्दी कर लिया। ....

(iv) सावधानी से खेलो, वर्ना चोट खा जाओगी। ....

(v) मैं गरम दूध ही पीती हूँ। ....

(vi) वह उठकर बैठ तक नहीं पाता है। ....

4. निम्नलिखित अव्यय शब्दों को सही समूह में लिखिए :

तथा, तो, अरे! क्योंकि, वाह!, ही, अत:, सच!, तक

समुच्चयबोधक अव्यय	विस्मयादिबोधक अव्यय	निपात अव्यय
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

5. पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

बरकत मियाँ आज बहुत खुश थे। उनकी बरसों की साध पूरी होने जा रही थी। जवानी के दिनों से ही वे हज करने जाना चाहते थे। लेकिन गरीबी के कारण जा नहीं सके। दो-दो, चार-चार रुपए जोड़ते-जोड़ते बुढ़ापा आ गया। अब जाकर मतलब भर की रकम इकट्ठी हो पाई। वे दौड़-दौड़कर जाने की तैयारी में लगे थे। उनकी बीवी रुखसाना याद कर-कर के सारा सामान रख रही थी, ताकि रास्ते में कोई कठिनाई न हो। बरकत मियाँ ने कहा– "तुम सामान रख दो, मैं दौड़कर दुकान से थोड़ा गुड़ ले आता हूँ। रास्ते में काम आएगा।"

वे गुड़ लेकर लौटे तो रास्ते में सेवाराम मिल गया। वह बहुत परेशान लग रहा था। बरकत मियाँ ने उसकी परेशानी का कारण पूछा। सेवाराम ने कहा– "क्या बताऊँ चचा! माँ अस्पताल में भर्ती हैं।